



आभासी अंक 05  
सितंबर 2024



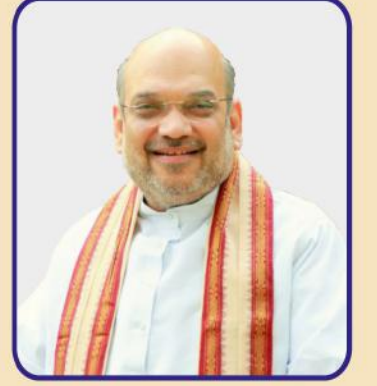
# काशी प्रतिबिंब

“निज भाषा उन्नति अहै  
सब उन्नति के मूल  
बिन निज भाषा ज्ञान के  
मिटत न हिय को सूल”  
- भारतेन्दु हरिश्चंद्र



राजभाषा विभाग  
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

अमित शाह  
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री  
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरु नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहारी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2024

  
(अमित शाह)

अश्विनी वैष्णव  
Ashwini Vaishnaw



रेल, सूचना और प्रसारण एवं इलेक्ट्रॉनिकी  
और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री  
भारत सरकार  
Minister of Railways, Information & Broadcasting  
and Electronics & Information Technology  
Government of India



### हिंदी दिवस संदेश

प्रिय साथियो,

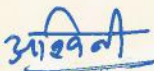
हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं है, यह एक ऐसी सांस्कृतिक धरोहर है जो हमें हमारी विरासत और इतिहास से जोड़ती है। यह सुगम, सहज और सरल भाषा है और पूरे विश्व में इसे बोलने वाले लोगों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए रेल मंत्रालय को वर्ष 2023-24 का राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है। मैं सभी रेलकर्मियों को इसके लिए बधाई प्रेषित करता हूँ।

आज हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर रेल परिवार के सभी सदस्य यह संकल्प लें कि हिंदी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करेंगे और हिंदी भाषा की उन्नति में अपना सक्रिय योगदान देंगे।

जय हिंद।

  
12.9.24

अश्विनी वैष्णव

## मंडल रेल प्रबंधक का संदेश

प्रिय साथियों,

“काशी प्रतिबिंब” के नए अंक में आपका स्वागत है। इस पत्रिका के माध्यम से मैं आप सभी को अभिवादन और शुभकामनाएँ देना चाहता हूँ। आपके अथक परिश्रम, समर्पण, कार्यक्षमता और टीमवर्क ने हमें नई ऊँचाइयों तक पहुँचने में सहायता की है।



जैसा कि हम जानते हैं, प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन सन् 1949 में भारतीय संविधान ने हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था। इस अवसर पर, मैं राजभाषा हिंदी के महत्व और हमारी भूमिका के बारे में कुछ महत्वपूर्ण विचार साझा करना चाहता हूँ।

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। हमारे संगठन में राजभाषा हिंदी का प्रभावी और उचित उपयोग हमारे सामूहिक प्रयासों और समर्पण को दर्शाता है। हमारा लक्ष्य है कि हिंदी को हमारे सभी आधिकारिक दस्तावेजों, संचार, और कार्यशालाओं में प्राथमिकता दी जाए। आपके सहयोग से ही हम इस दिशा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी प्रतिक्रियाएँ और सुझाव हमें हमारी सेवाओं और कार्यप्रणालियों में सुधार लाने में मदद करते हैं। आगामी पत्रिकाओं के लिए आपके सुझावों और फीडबैक को हम आमंत्रित करते हैं, जिससे हमें अपने कार्यप्रणाली को और अधिक प्रभावी और सटीक बनाने में मदद मिल सके। आशा है कि आप इस पत्रिका को पढ़कर प्रेरित होंगे और अपने कार्य में नई ऊर्जा और उत्साह के साथ जुटेंगे। आपके निरंतर सहयोग और समर्थन के लिए धन्यवाद।

हम मिलकर भविष्य में और अधिक सफलताएँ प्राप्त करेंगे।  
आप सभी को हमारी शुभकामनाएँ और धन्यवाद!

विनीत कुमार श्रीवास्तव  
मंडल रेल प्रबंधक

## अपर मंडल रेल प्रबंधक का संदेश

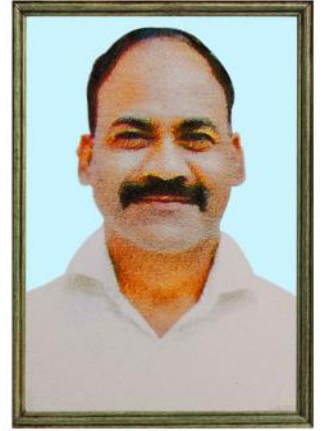
प्रिय साथियों,

“काशी प्रतिबिंब” पत्रिका के नवीनतम अंक में आपका स्वागत करते हुए मुझे अत्यंत गर्व और खुशी हो रही है।

इस पत्रिका के माध्यम से, हम आपको हमारी हिंदी भाषा की नीति और इसके अनुपालन में आपकी भूमिका के बारे में जानकारी प्रदान करना चाहते हैं। हिंदी को हमारे दैनंदिन कार्यों, संचार और दस्तावेजों में प्राथमिकता देना हमारी साझेदारी और सहयोग को भी मजबूत बनाता है।

हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी आधिकारिक संवाद, रिपोर्ट, और सामग्री हिंदी में सही और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत की जाए। इस दिशा में आपकी सक्रिय भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारी हिंदी भाषा की नीति का पालन करके हम न केवल सरकारी निर्देशों का पालन करते हैं, बल्कि हमारे संगठन की सामाजिक जिम्मेदारियों को भी पूरा करते हैं।

आशा है कि आप इस पत्रिका को पढ़कर हिंदी भाषा के प्रति अपनी समझ और प्रतिबद्धता को और भी मजबूत करेंगे। आपकी सक्रिय भागीदारी और योगदान के लिए हम आपका धन्यवाद करते हैं और आपके निरंतर सहयोग की अपेक्षा करते हैं।



**रोशन लाल यादव**

अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रा.)  
सह अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

## राजभाषा अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियों,

हिंदी माह के इस विशेष अवसर पर, हमारी पत्रिका के इस अंक में आपका स्वागत करते हुए मुझे अत्यंत खुशी हो रही है। हिंदी माह हमें हमारी राजभाषा हिंदी के महत्व को मान्यता देने और इसे हमारी दैनिक गतिविधियों में अधिक प्रभावी ढंग से अपनाने का अवसर प्रदान करता है।



हिंदी माह के दौरान, हम हिंदी के प्रचार-प्रसार और इसके सही उपयोग को बढ़ावा देने के लिए कई गतिविधियाँ और कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इन पहलों के माध्यम से, हम चाहते हैं कि हिंदी को हमारे सभी आधिकारिक दस्तावेजों, संचार, और सेवाओं में प्राथमिकता दी जाए और इसके प्रभावी उपयोग को बढ़ावा दिया जाए।

इस पत्रिका के इस अंक में, हमने हिंदी भाषा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाने वाले विभिन्न प्रयासों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, और नई पहलों की जानकारी साझा की है। इस विशेष अवसर पर, हम हिंदी के प्रति हमारी जिम्मेदारी को समझने और इसे अपनाने की दिशा में हमारे सामूहिक प्रयासों को मजबूत करने की अपील करते हैं।

हम सभी के प्रयास और सहयोग से ही हम हिंदी को हमारे संगठन में और भी प्रभावी रूप से लागू कर सकते हैं। आपकी सक्रिय भागीदारी और सुझाव इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

आप सभी को हिंदी दिवस और हिंदी माह की शुभकामनाएँ और आपके निरंतर प्रयास के लिए धन्यवाद!

नवनीत कुमार वर्मा  
वरिष्ठ आँकड़ा संसाधन प्रबंधक  
सह राजभाषा अधिकारी

इस अंक में

| क्र. सं. | रचना                                     | रचनाकार            | पृष्ठ सं. |
|----------|------------------------------------------|--------------------|-----------|
| 01       | अच्छे संचार कौशल में भाषा की भूमिका      | अजय कुमार सिंह     | 08        |
| 02       | आत्मज्ञान                                | संगीता सिंह        | 10        |
| 03       | कहानी बच्चे की                           | रवि झा             | 11        |
| 04       | रेलगाड़ी                                 | परितोष कुमार पीयूष | 11        |
| 05       | जनहित याचिका और रिट याचिका               | एम. ए. रिजवी       | 12        |
| 06       | सरल जीवन                                 | विकास केशरी        | 13        |
| 07       | कोकी                                     | पल्लवी             | 14        |
| 08       | साहिर : असफल प्रेम - पूरी कहानी          | डा. इरशाद अहमद     | 16        |
| 09       | दुविधा                                   | पूनम कुमारी        | 19        |
| 10       | जंगल की ओर                               | डॉ. कल्पना दुबे    | 20        |
| 11       | हमारी क्लास                              | अदिति              | 20        |
| 12       | हिंदी साहित्यकार : जयंति विशेष (भाग - 3) | अमित कुमार साव     | 21        |
| 13       | मंडल की गतिविधियां                       |                    | 27        |
| 14       | राजभाषा विभाग की गतिविधियां              |                    | 34        |

संरक्षक

विनीत कुमार श्रीवास्तव

मंडल रेल प्रबंधक

प्रधान संपादक

रेशन लाल यादव

अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा)  
सह अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक

नवनीत कुमार वर्मा

वरिष्ठ आंकड़ा संसाधन प्रबंधक  
सह राजभाषा अधिकारी

राजभाषा विभाग टीम

पूनम त्रिपाठी

वरिष्ठ अनुवादक

ममता यादव

वरिष्ठ अनुवादक

अजय कुमार सिंह

वरिष्ठ अनुवादक

अमित कुमार साव

कनिष्ठ अनुवादक

दिव्या शर्मा

कनिष्ठ अनुवादक

इस ई-पत्रिका की आवरण की डिजाइन एवं पृष्ठों की साज-सज्जा कनिष्ठ अनुवादक अमित कुमार साव द्वारा की गई है  
(नोट : पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं)

**पत्र व्यवहार** : संपादक, काशी प्रतिबिंब, राजभाषा विभाग, पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

ईमेल

: rba.ner.bsb@gmail.com

भाषा एक शक्तिशाली माध्यम है जिसके माध्यम से हम अपने विचारों, भावनाओं और विचारों को व्यक्त करते हैं। भाषा के बिना हमारे लिए एक-दूसरे के साथ संवाद करना और उन गहरे संबंधों को बनाना असंभव होगा। भाषा कौशल वे क्षमताएँ हैं जो आपको अपने विचारों को सुसंगत रूप से व्यक्त करने और दूसरों के साथ संवाद करने में सक्षम बनाती हैं। ये कौशल उस जानकारी को संरचना और प्रासंगिकता प्रदान करते हैं जो आप प्राप्तकर्ता को देना चाहते हैं। पढ़ना, लिखना, सुनना और बोलना चार आवश्यक कौशल हैं जो बुनियादी भाषा योग्यता का निर्माण करते हैं। संवाद करते समय लोग आमतौर पर इन कौशलों के संयोजन का एक साथ उपयोग करते हैं। बातचीत करते समय दो या अधिक भाषा कौशलों को मिलाना आम बात है। ये कौशल, जब एक साथ उपयोग किए जाते हैं, तो एक-दूसरे पर सह-निर्भर होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि सुनना सूचना का इनपुट है, तो बोलना आउटपुट का एक रूप है जहाँ श्रोता संदेश सुनने के बाद हस्तक्षेप कर सकते हैं, प्रश्न पूछ सकते हैं या इनपुट दे सकते हैं।

भाषा और संचार को दो अलग-अलग प्रवृत्तियाँ माना जाता है। एक दूसरे से अलग होने के बावजूद, दोनों एक दूसरे से संबंधित हैं। इसके अलावा, वे एक दूसरे पर निर्भर हैं। भाषा और संचार के बीच अंतर को स्पष्ट करने के लिए, इन दोनों अवधारणाओं के बारे में व्यापक ज्ञान होना चाहिए। सबसे पहले, भाषा एक ऐसा उपकरण है जो दो व्यक्तियों के विचारों, भावनाओं को व्यक्त करने और ले जाने में मदद करता है। दूसरी ओर, संचार मौखिक या अशाब्दिक रूप से संदेशों और सूचनाओं के आदान-प्रदान की एक प्रक्रिया है। इसी तरह, भाषा हमें ध्वनियों, प्रतीकों, लिखित या बोले गए शब्दों, मुद्रा, हावभाव या संकेतों आदि के माध्यम से अपनी भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने की अनुमति देती है। इस प्रकार, हम भाषा के माध्यम से संचार जारी रख सकते हैं। भाषा संचार का प्रमुख माध्यम है। सबसे बढ़कर, भाषा का प्राथमिक उद्देश्य हमारे चुनौतीपूर्ण और जटिल विचारों को आसान बनाना है। भाषा के बिना, प्रभावी बातचीत या संचार बनाना असंभव है। हम जानते हैं कि अलग-अलग देशों में संवाद करने के लिए अलग-अलग भाषाएँ हैं। दुनिया भर में हजारों भाषाएँ उपलब्ध हैं।

भाषा के अच्छे ज्ञान से आप अपने विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सकते हैं। यह आपको बैठकों और प्रस्तुतियों के दौरान मूल्यवान योगदान देने में मदद कर सकता है, जिससे करियर में प्रगति हो सकती है। इसलिए संचार में भाषा कौशल के महत्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। अच्छी भाषा कौशल से करियर में अच्छे मौके मिल सकते हैं जबकि खराब भाषा कौशल करियर को खत्म कर सकता है। संचार केवल बोलने, लिखने और पढ़ने तक सीमित नहीं है। यह अन्य संस्कृतियों और व्यावसायिक तरीकों की विविधता को समझने और उनकी सराहना करने के बारे में भी है। अच्छी भाषा कौशल व्यक्तिगत या व्यावसायिक, स्थायी संबंध बनाने में मदद करते हैं।

भाषा एक बहुआयामी उपकरण है जो संचार, अभिव्यक्ति और समझ के साधन के रूप में कार्य करता है। भाषा अधिग्रहण में शामिल है। बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना। इनमें से प्रत्येक कौशल किसी की भाषा दक्षता में अद्वितीय रूप से योगदान देता है और जीवन के विभिन्न पहलुओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

**बोलना** - बोलना अक्सर सबसे महत्वपूर्ण भाषा कौशल माना जाता है, क्योंकि यह सीधे मानव संचार को सक्षम बनाता है। यह सामाजिक और व्यावसायिक दोनों तरह से दूसरों के साथ बातचीत की सुविधा प्रदान करता है, जिससे व्यक्ति अपने विचारों, विचारों और भावनाओं को प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सकता है। व्यावसायिक बातचीत, नौकरी के साक्षात्कार और रोजमर्रा की बातचीत जैसी स्थितियों में धाराप्रवाह बोलने की क्षमता विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। प्रभावी ढंग से बोलने से व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है, संबंध बनते हैं और सांस्कृतिक समझ बढ़ती है।

**सुनना** - सुनना बोलने का प्रतिरूप है, और यह प्रभावी संचार में भी उतना ही आवश्यक है। मजबूत सुनने के कौशल के बिना, गलतफहमियाँ पैदा हो सकती हैं, जिससे संचार में रुकावट आ सकती है। सक्रिय श्रवण में न केवल शब्दों को सुनना शामिल है, बल्कि उनके अर्थ, स्वर और संदर्भ को समझना भी शामिल है। कुशल श्रवण भाषा सीखने वालों की सार्थक बातचीत में शामिल होने, सांस्कृतिक बारीकियों को समझने और उचित तरीके से जवाब देने की क्षमता को बढ़ाता है। शिक्षा में सीखने और समझने के लिए मजबूत सुनने का कौशल महत्वपूर्ण है।

**पढ़ना** - पढ़ना भाषा के ज्ञान और समझ का विस्तार करता है। यह व्यक्तियों को सूचना, साहित्य और संस्कृति के विशाल भंडार तक पहुँचने की अनुमति देता है। पढ़ने के माध्यम से व्यक्ति विविध दृष्टिकोणों, और समकालीन मुद्दों का पता लगा सकते हैं। पढ़ना अकादमिक और व्यावसायिक संदर्भों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जहाँ व्यक्तियों को लिखित जानकारी को संसाधित करने और उसका विश्लेषण करने की आवश्यकता होती है। मजबूत पढ़ने के कौशल से शब्दावली, समझ और आलोचनात्मक सोच में सुधार होता है।

**लेखन** - लेखन वह कौशल है जो व्यक्तियों को अपने विचारों और विचारों को संरचित और संगठित तरीके से व्यक्त करने की अनुमति देता है। यह दस्तावेजीकरण, रचनात्मकता और आत्म-अभिव्यक्ति के साधन के रूप में कार्य करता है। अकादमिक और व्यावसाय में रिपोर्ट, निबंध, ईमेल और संचार के अन्य रूपों को बनाने के लिए प्रभावी लेखन आवश्यक है। यह लिखित शब्द के माध्यम से ज्ञान, संस्कृति और इतिहास को संरक्षित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मजबूत लेखन कौशल व्यक्तियों को अपने विचारों को स्पष्टता और सटीकता के साथ व्यक्त करने में सक्षम बनाता है।

इन चारों भाषा कौशलों में से प्रत्येक अपने आप में महत्वपूर्ण है, उनका महत्व आपस में जुड़ा हुआ है। वे एक दूसरे के पूरक और सुदृढ़ होते हैं, जिससे समग्र भाषा प्रवीणता बनती है। उदाहरण के लिए, मजबूत सुनने का कौशल बोलते समय सटीक उच्चारण विकसित करने में सहायता करता है। पढ़ने से शब्दावली बढ़ती है, जिससे लेखन में सुधार होता है। लेखन अभ्यास से व्याकरणिक संरचनाओं की गहरी समझ हो सकती है, जिससे बोलने और सुनने दोनों को लाभ होता है।

आधुनिक समय में तकनीक ने इन कौशलों के बीच की रेखाओं को धुंधला कर दिया है। सोशल मीडिया और मैसेजिंग जैसे संचार प्लेटफॉर्म के लिए बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने के संयोजन की आवश्यकता होती है। वीडियो और पॉडकास्ट सहित मल्टीमीडिया सामग्री, शिक्षार्थियों को सुनने और बोलने दोनों गतिविधियों में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित करती है।

प्रभावी बातचीत के लिए भाषा और संचार आवश्यक हैं। वास्तव में, इस दुनिया में सभी मनुष्य अपनी मूल भाषाओं में संवाद कर रहे हैं। भाषा और संचार इतने घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं कि कभी-कभी लोग अपने अंतरों का जल्दी से निदान नहीं कर पाते हैं। परिणामस्वरूप, उन्हें लगता है कि दोनों का एक ही अर्थ है। लेकिन, वास्तव में, भाषा और संचार के बीच कुछ तार्किक अंतर मौजूद हैं। अर्थ संबंधी समस्याएँ अक्सर प्रेषक द्वारा इच्छित अर्थ और प्राप्तकर्ता द्वारा समझे गए अर्थ के बीच अंतर के कारण उत्पन्न होती हैं। ऐसा तब होता है जब प्राप्तकर्ता शब्द को वैसा अर्थ नहीं देता जैसा कि प्रेषक चाहता है। शब्द अपने स्वभाव के आधार पर कई तरह के अर्थ व्यक्त कर सकते हैं। प्राप्तकर्ता अपनी कल्पना, शैक्षिक पृष्ठभूमि और अनुभव के आधार पर इनमें से किसी भी तरीके से इसका अर्थ निकालने के लिए स्वतंत्र है। लेकिन संचार को परिपूर्ण बनाने के लिए, यह आवश्यक है कि प्राप्तकर्ता इसे वही अर्थ दे जो संदेश को एन्कोड करते समय प्रेषक के दिमाग में था। इसलिए, संदेशों की गलत व्याख्या की संभावना हमेशा बनी रहती है। अधिकतर, ऐसी समस्याएँ तब उत्पन्न होती हैं जब प्रेषक सरल और स्पष्ट शब्दों का उपयोग नहीं करता है जो प्राप्तकर्ता को सटीक अर्थ बता सकें।

भाषा की बाधाएं गलतफहमी, संदेशों की गलत व्याख्या, विकृत संदेश, गलत सूचना, भ्रम, अविश्वास, अनिश्चितता, हताशा, कमजोर और गलत प्रतिक्रिया, विमानन और समुद्री दुर्घटनाएं और आपदाएं, मौतें, तनाव, संघर्ष, लोगों के बीच हिंसा जैसी गलत संचार की समस्याएं पैदा कर सकती हैं। वे प्रभावी संचार में बाधा डालने वाले कारकों को जन्म दे सकते हैं। प्रभावी संचार को बढ़ावा देने और संदेशों को प्राप्त करने की सबसे अच्छी रणनीति भाषा की बाधाओं को पाटना है। सरल, स्पष्ट, ठोस, सटीक, परिचित और सार्थक शब्दों का उपयोग करना, व्याकरण और वर्तनी की गलतियों से बचना, प्रतिक्रिया देना और प्राप्त करना, द्विभाषी श्रमिकों और योग्य और लाइसेंस प्राप्त अनुवादकों को काम पर रखना, शब्दजाल का उपयोग कम करना, अस्पष्ट शब्दों, क्षेत्रीय बोली से बचना और समझ की पुष्टि करना, अनुवाद मशीनों का उपयोग करना, विल्लाने और व्यंग्य और नकल से बचना एक ही भाषा बोलने वाले लोगों को एक-दूसरे को समझने में कठिनाई हो सकती है यदि वे एक ही देश के विभिन्न क्षेत्रों से हैं। बोली और उच्चारण में अंतर, स्लैंग और क्षेत्रीय बोलचाल का उपयोग कई समस्याएं पैदा कर सकता है जो गलतफहमी और संचार में अंतराल का कारण बन सकता है।

संचार तब प्रभावी होता है जब इसमें शामिल सभी लोग एक-दूसरे को स्पष्ट रूप से समझते हैं। अच्छी भाषा कौशल व्यवसाय के सुचारु संचालन को सुनिश्चित करते हैं। इसके अलावा, यह समस्याओं को हल करता है और अक्सर भी पैदा करता है। हालांकि, यह ध्यान देने योग्य है कि भाषा कौशल केवल संचार तक ही सीमित

नहीं है। एक से अधिक भाषाएँ जानने से हमारी निर्णय लेने की क्षमता में सुधार होता है। दूसरी गैर-देशी भाषा जानने वाले लोग अधिक तर्कसंगत निर्णय लेते हैं। साथ ही, बहु-भाषाविद बेहतर मल्टी-टास्कर होते हैं। एक या अधिक भाषाएँ बोलने के कई लाभ हैं। भारत जैसे देश में, अंग्रेजी भाषा पर अच्छी पकड़ किसी की नौकरी की संभावनाओं में बहुत बड़ा अंतर ला सकती है। यह नए और बेहतर अवसर खोलता है। इसके अलावा, अधिक भाषाएँ जानने से व्यक्ति की संज्ञानात्मक क्षमताएँ भी बढ़ती हैं।

वरिष्ठ अनुवादक  
राजभाषा विभाग  
म.रे.प्र. कार्यालय  
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

काशी प्रतिबिंब

\* आत्मज्ञान \*

संगीता सिंह

वो सपने बोती है!  
वो आसमान से तारे चुनती है  
वो गर्म धूप को नमी देती  
चांद से शीतलता लेकर...

जीवन के मरुस्थल को  
वर्षा बनकर सींचा करती!  
झंकृत है उसके मीठे स्वर  
से वसुधा का सुंदर प्रांगण...

वह कायनात की शोभा है  
प्राणवायु है वह, जीवन देती है  
अगणित भार संभाले  
वह सारे कर्तव्य निभाती है!

है धुरी, धरा की वह  
ईश्वर की अनुपम रचना है!  
उसके अंदर है रची बसी  
भावों की अद्भुत संरचना...

मन से कोमल तन से कोमल  
किंतु सहन शक्ति अपार...  
प्रेम स्नेह की मूरत है...  
अब करती है खुद से भी प्यार !

अपने सपनों को बोती है  
अपने सपनों को जीती है!  
निर्भीक निडर होकर नारी  
अब साध रही अपनी खुशियां  
परवाह ना जग की करती है

अब ना रुकेगी रोके वो  
जो सपने बोती है....  
हर रिश्ते में बंधी हुई  
सारे कर्तव्य निभाती है...

बोए हुए सपनों को वह  
सींच रही उम्मीदों से...  
वह नारी है दृढ़ता की मूर्ति  
रुक ना सके अवरोधों से...

हर युग में आती है...  
क्यों? हर बार परीक्षा से गुजरे  
साबित करने खुद को?  
वह सोच रही!!!

जीवन के सार को जान लिया!  
नारी ने अपना मान किया!  
खुद अपना सम्मान किया!  
अब नहीं किसी पर निर्भर है!  
अब गर्वित है वह खुदपर!

अब निर्भीक निडर नारी  
सपनों को पूरा करके  
मंजिल को पाती है...  
वो जो सपने बोती है!!!

जो आसमान से तारे चुनती है..  
वह नारी है, अनुपम अद्भुत  
है नमन उसे



मैं प्वाइंट्समैन की ड्यूटी पर बनारस स्टेशन पर कार्यरत था। तभी काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस दिल्ली से बनारस आ रही थी। रोजाना की तरह, मैं अपनी ड्यूटी पर था। अचानक, मेरी नजर एक बच्चे पर पड़ी, जो ट्रेन के गेट पर बैठा था। वह शायद ग्यारह / बारह साल का होगा। मैले-कुचौले कपड़े, चेहरे पर उम्र से बड़ी थकान। वह मुझे टिकटकी लगाए देख रहा था। उसकी आंखों, इतनी छोटी उम्र में, गहरी चिंताओं से भरी हुई थीं।

मैं कुछ पल के लिए ठहर गया। उसकी आंखों में डूब गया। उसमें मुझे अपना बचपन दिखाई दिया। एक ऐसा बचपन, जो खो गया था। एक ऐसा बचपन, जिसके सपने धुएं में उड़ गए थे।

तभी मैंने देखा कि उसका दाया हाथ हवा में उठा और दो उंगलियां उसके होठों पर टिक गईं। अगले ही पल, उसके मुंह से धुआं निकला। एक बच्चे के मुंह से निकलता धुआं! यह दृश्य मेरे लिए अविश्वसनीय था। उसकी उंगलियों में फंसी सुर्ख चिंगारी, हंस रही थी, मगर उसकी आंखें... उसकी आंखें उतनी ही उदास थीं।

मैंने उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन वह कुछ नहीं बोला। बस मुझे देखता रहा। उसकी आंखों में एक सवाल था, एक गुहार थी। वह कहना चाहता था, लेकिन शब्द नहीं मिल रहे थे।

उस पल, मैं कुछ भी नहीं कर पाया। सिर्फ उसे देखता रहा। मन ही मन सोच रहा था, काश मैं उसकी नन्हीं उंगलियों से वह सिगरेट छीन लेता। काश, मैं उसे एक पेंसिल थमा सकता। काश, मैं उसकी सूनी आंखों में आसमान का दृश्य दिखा सकता।

उस दिन के बाद से, वह बच्चा मेरे मन में बस गया। मुझे हर रोज उसकी याद आती है। मैं सोचता हूँ कि “वह कहाँ होगा, क्या कर रहा होगा?” शायद वह अब भी उसी रास्ते पर चल रहा हो, उसी धुएं के घेरे में।

प्वाइंट्समैन  
बनारस

रेलगाड़ियाँ आती हैं  
कुछ वक्त ठहरती हैं  
फिर चली जाती हैं

कुछ लोग उतरते हैं  
कुछ लोग चढ़ते हैं  
कुछ आकर चले जाते हैं

बालक और गार्ड  
एक दूसरे को हरी झंडियाँ दिखाते हैं  
चक्के पटरियों को चूमते हुए ओझल हो जाते हैं

मैं सोचता हूँ  
किसी दिन मेरे लिए भी आएगी एक  
धुँआ उड़ाती, सीटी बजाती रेलगाड़ी

कोई उतरेगा मेरे लिए  
या मैं चढ़ूँगा किसी के लिए

रेल की नौकरी में  
आठ घंटे काम करने के बाद  
इतना सोच लेता हूँ  
ऐसा लगता है  
मैं कुछ ज्यादा सोच लेता हूँ...

समाधि  
कोविंग डिपो  
छपरा जंक्शन



**जनहित याचिका** - आम जनता के हित के लिए कानूनी कार्यवाही करने के लिए वंचित समूह या व्यक्तियों के सार्वजनिक मुद्दे को न्यायालय के समक्ष रखने के लिए जनहित याचिका शक्तिशाली उपकरण सिद्ध हुआ है। कोई भी भारतीय नागरिक सार्वजनिक हित में जनहित याचिका माननीय उच्च न्यायालय अथवा माननीय सर्वोच्च न्यायालय में दायर कर सकता है, केवल शर्त यह है कि, की गयी जनहित याचिका निजी हित में नहीं होनी चाहिए। सबसे विशेष बात यह है कि जनहित याचिका में जनहित याचिका दायर करने वाला व्यक्ति स्वयं बहस कर सकता है या एक वकील रख सकता है। भारतीय नागरिकों के मूल अधिकार के हनन होने पर उच्च न्यायालय में संविधान की अनुच्छेद 226 के तहत तथा उच्चतम न्यायालय में अनुच्छेद 32 के तहत पब्लिक इंटरेस्ट लिटिगेशन पी. आई. एल. जनहित याचिका दायर किया जाता है। न्यायालय यह फैसला करती है कि दायर की गयी याचिका जनहित याचिका है अथवा नहीं। सूचना अधिकार अधिनियम 2005 पारित होने के पश्चात् जनहित याचिका और मजबूत हो गयी है। जनहित याचिका एक कानूनी कार्यवाही है जो आम जनता के हितों की रक्षा के लिए सार्वजनिक हित में व्यक्ति या संगठन द्वारा की जाती है। जनहित याचिका में माननीय न्यायालयों के पास जनहित याचिकाओं में विभिन्न प्रकार की राहत देने की शक्ति होती है। रिट जारी करना, सरकार को कुछ कार्यवाही करने का निर्देश जारी करना, मानवाधिकार उल्लंघन के पीड़ितों को मुआवजा इत्यादि।

**रिट याचिका** - रिट याचिका भारतीय संविधान के अनुच्छेद 32 और 226 के तहत निर्धारित मौलिक अधिकार को लागू करने की एक कानूनी प्रक्रिया है। यदि मौलिक अधिकार का उल्लंघन रिट याचिकाएं दायर की जाती हैं। रिट याचिकाएं दायर करने वाले व्यक्तियों को याचिकर्ता कहा जाता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 32 और 226 के तहत संवैधानिक उपचार है। रिट याचिकाएं केवल माननीय उच्च न्यायालय में अनुच्छेद 226 और उच्चतम न्यायालय में 32 के तहत दायर किया जाता है। यदि किसी व्यक्ति के मौलिक अधिकार का उल्लंघन किया जाता है तो वह माननीय उच्च न्यायालय में अनुच्छेद 226 और उच्चतम न्यायालय में अनुच्छेद 32 के तहत रिट याचिका दायर कर सकता है। रिट का उपयोग आमतौर पर मौलिक अधिकारों को लागू करने या कानून के शासन की रक्षा के लिए किया जाता है। माननीय उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय द्वारा 05 प्रकार की रिट जारी की जा सकती हैं।

**01. बंदी प्रत्यक्षीकरण** - इस रिट का उपयोग गैरकानूनी हिरासत में रखे गए व्यक्ति की सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है। बंदी प्रत्यक्षीकरण रिट जब व्यक्ति को हिरासत में लिया जाता है और 24 घंटे के भीतर मजिस्ट्रेट के सामने पेश नहीं किया जाता है और बिना कानून का उल्लंघन किए बिना गिरफ्तार किया जाता है तब बंदी प्रत्यक्षीकरण रिट दायर किया जाता है।

**रिट याचिका कौन दायर कर सकता है** - रिट याचिका दायर करने का सामान्य नियम यह होता है कि जिस व्यक्ति के अधिकार का उल्लंघन होता है, वही व्यक्ति रिट याचिका दायर करता है, परन्तु बंदी प्रत्यक्षीकरण इसका अपवाद है। क्योंकि बंदी प्रत्यक्षीकरण में व्यक्ति अगर हिरासत में लिया गया हो या कैद किया गया हो या गम्भीर रूप से विकलांग इत्यादि हो सकता है। इसलिए बंदी प्रत्यक्षीकरण की ओर से कोई याचिका दायर कर सकता है। बंदी प्रत्यक्षीकरण का मूल दर्शन है कि ऐसे व्यक्ति को स्वतंत्र करना होता है जो कानूनी औचित्य के बिना हिरासत/कैद में हो, ऐसे में रिट राज्यों या व्यक्तियों या संगठनों के अधिकारी के विरुद्ध बंदी प्रत्यक्षीकरण जारी किया जा सकता है।

**02. परमादेश** - इस रिट का उपयोग किसी सार्वजनिक अधिकारी को सार्वजनिक कर्तव्य निभाने के लिए बाध्य करने के लिए किया जाता है। परमादेश का मूल दर्शन यह है कि कोई व्यक्ति या प्राधिकरण ऐसी शर्त को पूर्ण करने के बावजूद कार्यवाही करने से इंकार करता है जो कार्यवाही करने की मांग करता है, ऐसी स्थिति में माननीय उच्च न्यायालय अथवा माननीय सर्वोच्च न्यायालय उस व्यक्ति या प्राधिकरण को कर्तव्य निभाने/पूरा करने के लिए कह सकता है। परमादेश का अर्थ होता है कि 'हम आदेश देते हैं'। परमादेश को 'जागृती आह्वान' कहा जाता है। परमादेश रिट के माध्यम से सोए हुए अधिकारियों को अपना कर्तव्य निभाने के लिए जगाता है। परमादेश रिट के लिए याचिका किसी भी व्यक्ति द्वारा दायर की जा सकती है।

**03. निषेध** - इस रिट के माध्यम से किसी सार्वजनिक अधिकारी को उसके अधिकार क्षेत्र के बाहर कार्य करने से रोकने के लिए दायर किया जाता है। उच्चतम न्यायालय/उच्च न्यायालय निचली अदालतें जैसे विशेष न्यायाधिकरण मजिस्ट्रेट, आयोग और अन्य न्यायापालिका अधिकारियों को प्रतिबंधित कर सकते हैं, जो अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर कार्य कर रहे हों या प्रकृति के नियम के विपरीत कार्य किया जा रहा हो तो ऐसे में इस रिट का प्रयोग किया जाता है।

**04. उत्प्रेरण** - इस रिट द्वारा मामले की समीक्षा की जाती है, मामले की समीक्षा के लिए निचली अदालत से ऊपरी अदालत में स्थानंतरित करने के लिए किया जाता है। उत्प्रेरण (सर्टिओररी) का अर्थ होता है 'प्रमाणित करना'। किसी मुकदमे को निचली अदालत से ऊपरी अदालत में जाने आदेश देती है। उच्च न्यायालय द्वारा निचली अदालत या न्यायाधिकरण को लंबित किसी मामले को अपने पास स्थानंतरित करने या उसके आदेश को रद्द करने के लिए किया जाता है।

**05. अधिकार पृच्छा** - इस रिट का उपयोग किसी व्यक्ति के सार्वजनिक पद धारण करने के अधिकार को चुनौती देने के लिए किया जाता है। क्वो वॉरंटो का अर्थ होता है कि 'किस वारंट द्वारा' सह रिट किसी व्यक्ति या सार्वजनिक कार्यालय के दावे की वैधता की जाँच करने के लिए जारी किया जाता है। उस व्यक्ति या प्राधिकार को ऐसे कार्यालय में कार्य करने से रोकता है, जिसमें वह कार्य करने के लिए विधिक रूप से वैध न हो और सार्वजनिक पद पर कब्जा करना बंद हो जाता है। अधिकार पृच्छा रिट केवल सार्वजनिक पर लागू होती है, निजी कार्यालयों पर लागू नहीं होती है।



सहायक उप निरीक्षक  
रेलवे सुरक्षा बल  
गोरखपुर पोस्ट

काशी प्रतिबिंब

\* सरल जीवन \*

विकास केशरी

जीवन की सरल अभिलाषा है  
एक सत्य समझ में आता है॥

पाकर सम्मान और मनोहार  
प्रज्वलित न हो मन का विकार॥

विनती मैं बारंबार करूँ  
शक्ति और भक्ति अपार करूँ॥

मर्यादा कभी न पार करूँ  
बड़े का सदा सम्मान करूँ॥

प्रेम करू छोटे से सदा,  
बुजूर्गों का सदा ही ध्यान करूँ॥

जब भी मैं अपने मुख खोलूँ  
बोलूँ जब भी मीठा बोलूँ॥

दिल पे न किसी के घाव करूँ  
सरल, सहज दरिया बनकर  
दया, प्रेम, परोपकार करूँ॥

वरिष्ठ लिपिक  
आरटीआई सेल  
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

जब रेलवे आवास में आना हुआ तो सोचा नहीं था कोई स्वागत करता मिलेगा। वास्तव में, स्वागत करता नहीं बल्कि स्वागत करती मिली, वह थी छोटी-सी, प्यारी-सी “कोकी”। अब आप कहेंगे यह भी भला कोई नाम हुआ। पर यह नाम भी उसने खुद ही चुना था। हुआ यों कि जैसे ही हमने रेलवे आवास के प्रांगण में प्रवेश किया कोकी दौड़ती हुई हमारे पास आई और इस तरह से खड़ी हुई जैसे कह रही हो हमारे घर में आपका बहुत-बहुत स्वागत है और जैसे वह हमारी ही प्रतीक्षा कर रही हो। पापा-मम्मी गाड़ी से सामान घर के अंदर रखवा रहे थे और कोकी अपने स्थान पर मुस्तैदी के साथ डटी थी। जैसे घर की सारी जिम्मेदारी उसी के सिर पर हो। पर, हमारे लिए तो वो कौतूहल का विषय थी। हम उसके पास गए, हमने अपना परिचय दिया और अब हम दोस्त थे।

पर, असली समस्या तो अब थी। पापा का तो ज्यादा नहीं पर मम्मी कुत्तों से बहुत डरती थीं और घर में कुत्ता, गुंजाइश ही नहीं थी। पर, कोकी भी कहां मानने वाली थी। धीरे-धीरे उसने मम्मी के दिल में भी अपनी जगह बना ली। तो अब बारी थी उसके नामकरण की। सबने उसके लिए एक-एक, दो-दो नाम बताए पर कोई फायदा नहीं। उसने कोई भाव नहीं दिया। पर जैसी ही मैंने कहा, कोकी.... उसने पलटकर ऐसे देखा जैसे उसने इस नाम की स्वीकृति दे दी हो। तो आइए वलें कोकी के साथ एक सुहाने सफर पर।

सुबह उठते ही कोकी आपको दुम हिलाते हुए गुड मॉर्निंग कहेगी। सिर्फ आपको नहीं, घर के प्रत्येक सदस्य को। सुबह की चाय पर, चाय आप पीयेंगे और बिस्किट कोकी खायेगी। मजाल है जो नाश्ता आप कोकी के बिना कर लें। खबरदार, जो रात की रोटी डाला, सूंघेगी तक नहीं। रात की रोटी आप खुद ही निबटारें, वह तो गरमागरम ही खायेगी। भोजन तो उसे ताजा ही चाहिए वरना भूखे रहना गंवारा। स्कूल जाते समय स्कूटी के पास दुम हिलाते हुए बाय कहना और पीछे-पीछे दूर तक दौड़ते आना वह अपनी ड्यूटी समझती। इसी तरह मम्मी को भी मेन रोड तक रोज छोड़कर आती। जब सभी अपने-अपने काम में व्यस्त हो जाते तब वह फ्री होती। दिन में जाने कहां जाती पर सबके वापस आने का टाइम उसे पता था। दरवाजे पर पहुंचते ही कोकी भी हाजिर हो जाती।

दिन बीतता रहा। अब कोकी के कुछ दोस्त भी बन गए थे। कभी-कभी उसके कुछ दोस्त घर भी आने लगे थे। उनके साथ कोकी बाहर भी जाने लगी थी। अब तो एकाध लंच भी रिकप होने लगा था। शायद कोकी लंच बाहर अपने दोस्तों के साथ करने लगी थी। इसी बीच हमारे चाचा की शादी पड़ी। बड़ी चिंता हुई, कोकी को कहां छोड़ें। पर कर ही क्या सकते थे। जब शादी से वापस आए, नानी माँ हमारे साथ थीं। गैलरी का दरवाजा खोलते ही नानी माँ जोर से विल्लाईं। हम सब दौड़ते हुए पहुँचे। अरे ये क्या, कोकी के तीन नन्हे-नन्हे बच्चे। बिल्कुल वूहे जैसे। आँखें बंद, कूंकूंक करते हुए। हम सब एक्साइटमेंट में यह भूल गए कि कोकी डर और असमंजस से हमें देख रही है। नानी माँ ने उसे आश्वासन दिया कि हम उसके बच्चे को कोई नुकसान नहीं पहुंचावेंगे, फिर भी कोकी को आश्वस्त होने में कई दिन लगे।

अब तो हमारी दिनचर्या में एक और काम जुड़ गया था, कोकी के बच्चों का ख्याल रखना। कई दिनों तक कोकी अपने बच्चों के साथ ही रही, बाहर झांका तक नहीं। फिर कोकी थोड़ी-थोड़ी देर के लिए बाहर जाने लगी। कुछ दिनों बाद जब कोकी के बच्चों की आँखें खुलीं तब तो और मुश्किल हुई। बच्चे एक जगह टिकते ही नहीं थे। कोई शू-स्टैंड के पीछे मिलता तो कोई स्कूटी के नीचे। एक बार तो एक बच्चा साइकिल के पहिए में ही घुस गया। ऐसे फंसा कि निकाले न निकले। समस्या बड़ी थी। बच्चे को निकालना भी था और जान भी बचानी थी। बच्चा अलग विल्लाए जा रहा था और कोकी अलग छटपटा रही थी। बड़ी मशक्कत के बाद बच्चे का रेस्व्यू किया गया। पर यह क्या बच्चा तो हिल ही नहीं रहा। उसके गले में चोट आई थी। कोकी उसे चाट रही थी। पर कोई रेस्पांस नहीं। हमारी सांसें अटकी थीं। नानी माँ तसल्ली दे रही थीं, ठीक हो जाएगा। उस दिन तो खाना भी हमारे गले से नहीं उतरा। नानी भी डरी हुई थीं। अगले दिन बच्चे ने थोड़ा रेस्पांस किया। शायद उसका दर्द कुछ कम हुआ था। पर दिन भर उसने दूध नहीं पिया। तब हमने जाना जानवर भूखे रहकर खुद को स्वस्थ करते हैं। हमारी जान में जान आई। धीरे-धीरे बच्चा स्वस्थ हो गया। अब तीनों बच्चे थोड़े बड़े हो गये थे। डॉगी की तरह दो पैरों पर बैठने लगे थे। और हम उनके साथ अपने सपने बुनने लगे थे।

कोकी और उसके बच्चे नानी माँ की पहली प्राथमिकता थे। पर कोकी भी अपनी कृतज्ञता जताने से नहीं चूकती। सुबह-शाम नानी माँ के साथ सैर पर जाती। यहां तक कि बाजार जाने से भी नहीं चूकती। अब तीनों बच्चे भी बड़े हो चले थे। सड़क पर निकल आते और दूसरे बच्चों के साथ खेलने लगते। एक शाम हमने पाया कि दो ही बच्चे घर पर हैं। तीसरा कहां है। खोज शुरू हुई। कोकी भी हमारे साथ गई। देखा, घर के पीछे दूसरी गली में यूं ही पड़ा है। शायद बाइक के नीचे आ गया था। आँखों में आंसू लिए हम लोग घर आ गए। कोकी को लाख बुलाया, नहीं आई। रात हो गई थी। नानी माँ ने दरवाजा बंद नहीं किया, कोकी आएगी। देर रात कोकी आई। आना ही था, बाकी दोनों बच्चों के लिए। पर दोनों आँखों के कोर गीले थे। आकर चुपचाप बच्चों के पास लेट गई। नानी माँ ने बहुत पुचकारा, कुछ खा ले, थोड़ा खा ले। पर नजर भी नहीं उठाई। वैसे ही पड़ी रही। उस रात हम में से किसी ने भी खाना नहीं खाया। हम सब एक-दूसरे को सांत्वना दे रहे थे। हमारे दिन तो बीत जाते पर हमारी शाम उदास हो गई थी। दोनों बच्चों के साथ खेलते हुए भी तीसरे के लिए मन उदास हो जाता। फिर नानी माँ समझातीं, इनका ऐसे ही होता है, बेटा। इसलिए जो है, उन पर ध्यान देते हैं। धीरे-धीरे हमने भी अपने मन को समझा लिया।

गरमी अपनी चरम सीमा पर थी। घर से निकलना मुश्किल लगता था। ऐसे में भी वह दिन में बाहर चला जाता दिन भर कहां रहता, पता नहीं। नानी माँ बहुत कोशिशों के बाद भी उसे रोककर नहीं रख पा रही थीं। दिन भर गायब रहने के बाद एक दिन शाम को वह झाड़ियों में मरा पाया गया। उसे फेंकने के लिए किसी को बुलाया गया। पर कोकी उसे उठाने ही न दे। उसके चारों तरफ घूम-घूम कर जोर-जोर से भौंकती। जैसे काट ही खाएगी। बड़ी मशक्कत के बाद उसे उठाया जा सका। पर कोकी हताश हो चुकी थी। चुपचाप बैठी रहती। दोनों आँखों के कोर गीले रहते। कभी आँसू भी टपक जाते। जानवर भी इतने मार्मिक और संवेदनशील होते हैं। कोकी को सामान्य होने में बहुत वक्त लगा। उसके दोस्त फिर से आने लगे थे। और कोकी अब बाहर भी जाने लगी थी। कोकी को खुश देखकर हमने राहत की सांस ली। अब कोकी फिर से माँ बनने वाली थी। किंतु इस बार हम सतर्क थे। क्योंकि उस नियति से हम बार-बार नहीं गुजरना चाहते थे। हमने उसके बच्चों के लिए बाहर ही इंतजाम कर दिया। कोकी की सुविधा का पूरा ध्यान रखा। कोकी ने फिर से तीन बच्चों को जन्म दिया। हमें खुशी थी पर उत्साह न था। क्योंकि अंत में हुआ वही, जिसका हमें डर था। फिर से एक-एक कर उसके सारे बच्चे स्वतंत्र हो गए। अब तो कोकी भी टूट चुकी थी। उदासी उसका स्वभाव बन गया। खाना भी कम कर दिया। यूं ही बस बैठी रहती। सुंदरता भी कम हो गई थी। बदन पर हड्डियां दिखाई देने लगी थीं। हमारे स्कूल से आने पर दौड़कर आती जरूर थी पर उदासी हट न पाती थी। क्या जानवर इतने संवेदनशील होते हैं? होते हैं, पहली बार जाना। अब तो उसके बाल भी झड़ने लगे थे। शायद कोई रोग लग गया था। उसे दवाई दी गई। बाल झड़ना तो रुक गया, पर उदासी न गई। कभी दिन भर गायब रहती, तो कभी दिन भर दरवाजे पर बैठी रहती। हमारा दुलार भी उसके दर्द को कम न कर सका। दिन ब दिन उसकी उदासी गहरी होती गई। खाने का कोई समय निश्चित न रहा। ज्यादातर समय बाहर ही बीतता। घर आना भी कम दिया। जाने कहां भटकती रहती। अब तो रात के खाने के लिए भी उसे आवाज लगानी पड़ती थी।

इधर कई दिनों से कोकी दिखाई नहीं पड़ी। क्या उसने कॉलोनी भी छोड़ दिया है? हमने पूरी कॉलोनी छान मारा। क्या कोकी भी? नहीं, नहीं... हमने उम्मीद नहीं छोड़ी। अब तो प्रार्थना में कोकी भी शामिल हो गई। बस एक बार दिख जाए।

मम्मा, आज कोकी आई थी। अच्छा, कहां है? अंदर नहीं आई? नहीं। दो कदम चलती थी, फिर हिलने लगती थी। लगता है, कई दिनों से खाना नहीं खाया। खाना नहीं दिया तुमने? जबतक खाना लेने आए, तब तक चली गई। फिर खोजबीन शुरू हुई। पर कुछ भी हाथ नहीं लगा। अब तो रही-सही उम्मीद भी जाती रही। कुछ दिनों बाद कोकी मिली। उसी जगह, जहां उसका पहला बच्चा मरा पड़ा था। मम्मी फूट-फूट कर रो पड़ीं।

कोकी अब इस दुनिया में तो नहीं है, पर हमारे दिल में हमेशा रहेगी।

कोकी : हमारी पहली पेट्स।



कक्षा - XII

पुत्री - पूनम कुमारी

वरि. अनुभाग अधिकारी/लेखा

प्रेम एक नैसर्गिक अनुभूति है, ईश्वर का एक वरदान है एवं प्रकृति का अमूल्य उपहार है। संसार के सारे जीव-जन्तु इस अनुभूति का प्रदर्शन अपने-अपने ढंग से करते हैं। यह प्रदर्शन जब सामाजिक ताना-बाना के दायरे में रहकर सभ्य और सुसंस्कृत तरीके से होता है तो इस का आकर्षण सार्वभौमिक हो जाता है। परन्तु जब यह उच्छृंखल व्यवहार का रूप ले लेता है तो समाज के लिए निंदनीय विषय बन जाता है। प्रख्यात एवं प्रतिष्ठित शायर साहिर लुधियानवी के जीवन की प्रेम गाथा पर जब दृष्टिपात करते हैं तो हमें आश्चर्यजनक अविश्वसनीय और अतुलनीय मानवीय मूल्यों का बोध होता है।

साहिर के जीवन में जो पहली महिला आई उसका नाम महेन्द्र चौधरी था। वह उसी कॉलेज की छात्रा थी जिस कॉलेज में साहिर लुधियानवी अध्ययनरत थे। महेन्द्र चौधरी से जब साहिर का परिचय हुआ उस समय वे कॉलेज छात्र संघ के अध्यक्ष थे और अपने ओजपूर्ण भाषणों एवं क्रांतिकारी कविताओं के कारण छात्रों में काफी लोकप्रिय थे। महेन्द्र चौधरी स्थानीय कांग्रेसी नेता और अधिवक्ता रामराज चौधरी की पुत्री थी। साहिर की जिन्दादिली, राजनैतिक विचारों, सुंदर कविताओं और आकर्षक व्यक्तित्व की वजह से महेन्द्र चौधरी मन ही मन उन पर फिदा थी। साहिर जब भाषण देते तो उसे ऐसा प्रतीत होता कि वे उसके मन की बातों को व्यक्त कर रहे हैं। थोड़े दिनों में दोनों एक दूसरे से मिलने लगे और यह मुलाकत प्रेम में परिणत हो गई।

एक बार की बात है कि महेन्द्र चौधरी कुछ दिनों तक कॉलेज नहीं आई। साहिर काफी बेचैन हुए। खबर पाने का कोई दूसरा जरिया भी नहीं था। उस समय साहिर अपनी जान को जोखिम में डालकर उसके घर तक पहुँच गए। हालाँकि महेन्द्र चौधरी से मुलाकत नहीं हुई।

प्रेम का सिलसिला बहुत दिनों तक नहीं चला। महेन्द्र चौधरी को यक्ष्मा रोग हो गया और वह इस दुनिया से चल बसी। साहिर को जब यह खबर मिली तो वे बहुत देर तक फूट-फूट कर रोए तथा अपने एक मित्र हाफिज लुधियानवी के साथ उसकी अंत्येष्टि में सम्मिलित हो कर श्मशान स्थान तक गए। उन्होंने अपनी पुस्तक “मैं साहिर हूँ” में लिखा है:

“मैं महेन्द्र की मंडोली (जनाजे) में भी गया और जब महेन्द्र की विता को जलते हुए देखा तो मेरी आँखों के सामने एक ख़ुबसूरत वजूद चिंगारियों भरे धुएँ में उड़ता हुआ लगा और वह देखते ही देखते हवाओं में तहलील (घुलमिल) हो गई। वह ख़ुबसूरत आँखें जो चुप होकर भी बहुत कुछ कह जाती थीं आग की नज़ हो रही थीं। जिन्दगी से भरपूर वह मुस्कुराता हुआ चेहरा राख हो रहा था”।

मैं साहिर हूँ-चन्द्र वर्मा , पृष्ठ सं. 47

वहां साहिर की संवेदना बेचैन हो गई और अहसास में काफी शिथिल आ गई। विचारों के पंख फड़फड़ाने लगे और दिल से मरसिया की पंक्तियाँ उद्गेलित होने लगीं। घर वाले रस्म व राह निभा कर चले गए। साहिर उसी श्मशान में तनहा बैठकर महेन्द्र चौधरी की याद में एक लम्बी कविता “मरघट की जमी” लिखी जो उनकी प्रेमानुभूति और अन्तःवृत्ति की अद्भुत मिसाल है।

मेरे तस्सवुराते कुहन (पुरानी कल्पना) की अमी (सुरक्षित रखने वाला) है तू

मरघट की सरजमीन मुकदस (पवित्र) जमी है तू

इक बेवतन असीरे (कैद) वतन का सलाम ले

अजार्द (दुखी) ए बहारे वमन का सलाम ले

कविता “मरघट की जमी” की चुनिन्दा पंक्तियाँ-कुलियाते साहिर-पृष्ठ सं. 49

कॉलेज में साहिर अपने क्रांतिकारी भाषण, श्रृंगार रस की शायरी और आकर्षक व्यक्तित्व के कारण छात्रों में काफी लोकप्रिय हो गये थे। वे छात्र संघ का नेतृत्व कर रहे थे। एक बार का वाक्या है कि कॉलेज प्रशासन ने पाश्चात्य संगीत का कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया। साहिर इस कार्यक्रम के विरोध में खड़े हो गये और उन्होंने छात्रों की एक सभा बुलाई। उस सभा में उन्होंने एशर कौर नाम की एक छात्रा को राष्ट्रीय गान गाने के लिए तैयार किया। उसकी आवाज सुरीली थी और उर्दू शब्दों का उच्चारण सही था। इस विरोध के बाद एशर कौर और साहिर के प्रेम की चर्चा होने लगी। साहिर भी मन ही मन उससे प्यार करने लगे थे। लेकिन एशर के मन में ऐसी भावना नहीं थी। कॉलेज की छुटियाँ हो चुकी थीं। साहिर ने एक दिन शाम में एशर से

भेंट की और कहा:

सुना है हर जवां पत्थर के दिल में आग होती है  
मगर जब तक ना छेड़ो, शर्म के पर्दे में सोती है

इस मुलाकात की खबर किसी तरह अंग्रेज प्रिंसिपल मि. हार्वे तक पहुँच गई। कुछ दिनों पूर्व कमिश्नर ने भी साहिर के विरुद्ध “डिफेंस ऑफ इंडिया एक्ट” के तहत कार्यवाई करने का पत्र लिखा था। इस घटना का प्रभाव साहिर पर गहरा पड़ा। इसके बाद साहिर ने निश्चय कर लिया कि अब वे एशर से कभी नहीं मिलेंगे। किसी कारणवश कॉलेज भी छूट गया। इधर एशर भी अपनी बदनामी की वजह से उदास एवं गुमसुम रहने लगी।

एशर के साथ प्रेम में नाकाम होने के बाद साहिर लाहौर चले गये। वहां प्रीतनगर अवस्थित पत्रिका “प्रीत लड़ी” के सम्पादक सरदार गुरुबख्श सिंह से भेंट हुई। वे साहिर की शायरी और राजनैतिक विचारों से काफी प्रभावित हुए। उन्हीं के प्रयास से साहिर का प्रथम गजलों का संग्रह “तलिखयाँ” 1943 ई. में प्रकाशित हुआ। साहिर इस पत्रिका के सम्पादक मण्डल में सम्मिलित हो गए। इसी कार्यालय में पंजाबी भाषा की उभरती हुई लेखिका अमृता प्रीतम से भेंट हुई। यह मुलाकात धीरे-धीरे प्रेम में परिवर्तित होने लगी।

अमृता प्रीतम का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक था और विचार प्रगतिशील एवं प्रौढ़ थे। दोनों के मिलने का सिलसिला दराज होने लगा। एक बार साहिर की तबियत खराब हो गई तो अमृता ने काफी सेवा-टहल की। तब साहिर ने अमृता के लिए “एक तस्वीरें रंग” नामक कविता लिखी। चन्द पंक्तियाँ देखें:

मैंने जिस वक्त तुझे पहले पहल देखा था  
तू जवानी का कोई ख्वाब नजर आई थी  
हुस्न का नगमा ए जावेद (जिंदा रहने वाला गीत) हुई थी मालूम  
इश्क का जज्बा बेताब नजर आई थी

एक तस्वीरें रंग- तलिखयाँ , पृष्ठ सं. 77

इसके बाद साहिर ने अमृता प्रीतम के लिए अनेकों कविताएँ लिखीं जिनमें “मताए गैर” और “ऐ मेरे मुजमहिल ख्वाब” विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। उधर अमृता की भी यही स्थिति थी। उन्होंने ने भी साहिर के लिए अनेकों रचनाएँ कीं। साहिर को अमृता प्रीतम के वैवाहिक जीवन के बारे में सब कुछ मालूम था और उन्हें इस बात का एहसास था कि यह प्यार फलीभूत होने वाला नहीं है। कविता “मुजमहिल ख्वाब” (बेचैन सपने) की ये पंक्तियाँ वास्तविक स्थिति बयाँ कर रही हैं:

मेरे ख्वाबों के झरोकों को सजाने वाली  
तेरे ख्वाबों में कहीं मेरा गुजर है कि नहीं  
पूछ के अपनी निगाहों से बता दे मुझ को  
मेरी रातों के मुकदर में सहर (सुबह) है कि न

तलिखयाँ - पृष्ठ सं.- 102 साहिर

“मेरी और साहिर की दोस्ती कभी भी लफज हायल नहीं हुए थे। यह खामोशी का हसीन रिश्ता था। मैंने जो नज्में उसके लिए लिखीं, उस मजमुए को जब अकादमी अवार्ड मिला, तो प्रेस रिपोर्टर ने मेरी तस्वीर लेते हुए वाहा कि मैं कागज पर कुछ लिख दूँ, तो मैंने बार-बार एक ही लफज लिखा था- साहिर.... साहिर.....”

रसीदी टिकट - अमृता प्रीतम , पृष्ठ सं. - 117

1945 ई. की बात है कि हैदराबाद में प्रगतिशील लेखकों का बड़ा अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में साहिर भी शामिल हुए। तत्कालीन बम्बई में उर्दू और हिन्दी के साहित्यकारों का अक्ल जमावड़ा था। साहिर भी फिल्मों में अपना भाग्य आजमाने लगे। उसी दरम्यान कृष्ण चन्द्र के माध्यम से कहानीकार खदीजा मसरूर और हाजरा मसरूर से जान पहचान हुई जो अपनी बड़ी बहन इशरत दुर्गानी के साथ मुंबई में रहती थीं। साहिर के व्यक्तित्व ने दोनों बहनों को काफी आकर्षित किया, विशेष रूप से हाजरा मसरूर को।

यह बात हाजरा मसरूर के पत्रकार पिता हसन आब्दी तक पहुँच गई जो उस समय अलीगढ़ में रहते थे। वे शादी के लिए तैयार हो गए। मंगनी की रस्म बड़ी बहन इशरत दुर्गानी के यहाँ मुम्बई में पूरी हुई। परन्तु मुल्क के बँटवारे के समय हसन आब्दी अपने परिवार के साथ पाकिस्तान प्रवास कर गए। साहिर की शादी का ख्वाब अधूरा रह गया।

साहिर गुरुदत्त से मिले और तलिखयाँ की एक प्रति भेंट की। गुरुदत्त को साहिर की शायरी पसंद आई। उन्होंने साहिर से फिल्म ‘बाजी’ और ‘प्यासा’ के नगमें लिखवाए। दोनों फिल्में हिट हो गईं। साहिर कुछ ही दिनों में सफलता के शिखर पर विराजमान हो गए।

उन्हीं दिनों की बात है कि एक दिन सुधा मल्होत्रा से भेंट हुई। सुधा पार्श्व गायिका के तौर पर उभर रही थी। समय बीतने के साथ दोनों एक दूसरे के करीब होते गए। सुधा पार्श्व गायिका के साथ-साथ संगीत कम्पोजर भी थीं। उन्होंने फिल्म दीदी में साहिर का यह गाना स्वयं कम्पोज किया था:

**नायिका:** तुम मुझे भूल भी जाओ तो यह हक है तुमको  
मेरी बात और है मैंने तो मुहब्बत की है.....

**नायक:** जिंदगी सिर्फ मुहब्बत ही नहीं, कुछ और भी है  
जुल्फ व रुखसार (वेहरा) की जन्नत नहीं कुछ और भी है.....

कहा जाता है कि इस नगमे में नायिका के स्वर में सुधा के मन की बात थी जबकि नायक की आवाज में साहिर ने अपनी भावनाएं व्यक्त की थीं। एक दिन वह समय आया जब सुधा की शादी 1960 ई. में निरधर मोटवानी, जो एक व्यापारी थे, से हो गई। सुधा फिल्मी दुनिया को अलविदा कहकर लन्दन चली गई। वर्षों बाद साहिर की भेंट सुधा से मुंबई के एक पार्टी में हुई तो दोस्तों ने साहिर से कुछ सुनाने की फरमाइश की। साहिर ने अपनी कविता “स्वयंसूरत मोड़” सुनाई। चन्द पंक्तियां देखें:

चलो एक बार फिर से अजनबी बन जाएँ हम दोनों  
न मैं तुमसे उम्मीद रखूँ दिल नवाजी की  
न तुम मेरी तरफ देखो गलत अंदाज नजरो से  
न मेरे दिल की धडकन लड़खड़ाए मेरी बातों से  
न जाहिर हो तुम्हारी कशमकश का राज नजरो से  
चलो एक बार .....

तल्लिखयाँ - पृष्ठ सं.- 122

बाद में इस नगमे को फिल्म ‘गुमराह’ में शामिल कर लिया गया। 1961 ई. की बात है कि एक दिन सुधा अपने पति के साथ साहिर से मिलने उनके बंगले पर पहुँच गईं। साहिर काफी प्रसन्न हुए और उनकी बड़ी आवभगत की। साहिर पुरानी यादों में खो गये। उन्होंने उसी समय एक गजल लिखी:

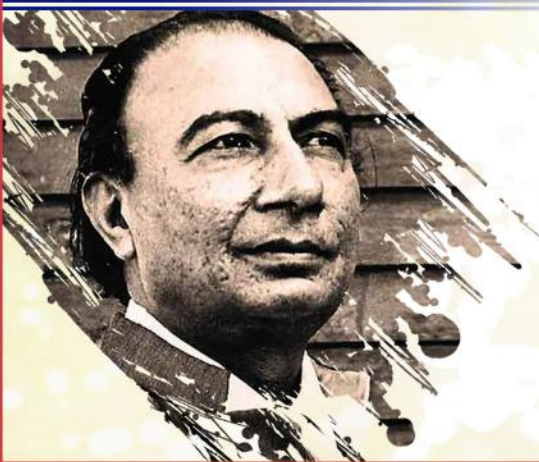
कभी खुद पे कभी हालत पे रोना आया  
बात निकली तो हर एक बात पे रोना आया  
हम तो समझे थे कि हम भूल गये हैं आपको  
क्या हुआ आज, यह किस बात पे रोना आया

कुछ दिनों के बाद यह गजल फिल्म ‘हम दोनों’ में देवानन्द पर फिल्माई गई।

इस प्रकार हम देखते हैं कि साहिर के जीवन में अनेकों महिलाएं आईं परन्तु साहिर की उदासीनता, लज्जाशीलता और अन्तर्मुखी वृत्ति के कारण वे पवित्र वैवाहिक बंधन में बंध नहीं पाईं। साहिर ने अपने जमींदार पिता का महिलाओं के प्रति असंवेदनशील, अमर्यादित और तिरस्कारपूर्ण व्यवहार एवं चरित्र देखा था जो उनके अवचेतन मन में कहीं ना कहीं बसा हुआ था। साहिर अपनी आपबीती में लिखते हैं।

“मेरी माँ की हसरत थी कि उनके रहते मैं शादी कर लेता। लेकिन मैं मुहब्बत तो कर सकता था मगर उसे शादी में तब्दील करने से घबराता था। शायद अपनी जाती (निजी) जिन्दगी में बचपन से ही इतना कुछ देख चुका था कि इस रिश्ते से परहेज सा हो चला था। इसलिए भी कि औरत मेरे पास हमेशा ही उस ऊँचे मुकाम पर रही हैं जिस ऊँचे मुकाम पर जमीन की किसी दूसरी शय (वस्तु) को देख नहीं पाता और औरत शादी के रिश्ते में बांधकर पाबन्द करने से जिन्दगी भर कतराता रहा। शायद मेरे बाप ने मेरी माँ और बेशुमार बीवियों के साथ जो कुछ किया था, मेरे अवचेतन मन से औरत के शोषण की यह कैफियत मिटी नहीं”।

मैं साहिर हूँ - पृष्ठ सं.- 284



लो. पा. मेल, डीजल लॉबी  
छपरा जं.  
वाराणसी मण्डल, पूर्वोत्तर रेलवे

अमूमन कार्यालय आना पैदल ही होता है क्योंकि कार्यालय हमारे आवास के समीप ही है। और इसके कई फायदे भी हैं, जैसे सुबह-शाम की वॉक और वॉक-इन-टॉक।

एक शाम कार्यालय से वापस आते हुए कान में आवाज आई, “चाय पीना है। बहन जी, चाय पीना है”। चूंकि फोन पर थी, ध्यान দিয়ে बिना मैं गली में मुड़ गई। आवाज और तेज हो गई। “बहन जी, बहन जी, चाय पीना है”। जब मैं ओझल हो गई, आवाज बदल गई। “भाई साहब, चाय पीना है”। आवाज और तेज हो गई। “भाई साहब, भाई साहब, चाय पीना है। चाय पीना है, भाई साहब”। अब मेरे कदम ठिठक गए। मैंने फोन पर कहा, कॉल बैक करती हूँ। मैं वापस गई। देखा, दो साधू बैठे हैं। एक तो चुपचाप थे, दूसरा आवाज लगा रहे थे। देखते ही कहा, “राधे-राधे”। मैंने उन्हें 20 रुपया दिया। उन्होंने अवरज से देखा और मैंने प्रश्नभाव से। क्या बीस रुपये में चाय नहीं आएगी? उन्होंने भाव समझ झट से स्वीकार कर लिया। मैं पलटी। “आशीर्वाद नहीं लोगी?” सवाल ने मुझे रोका। मैंने उनके पैर छुए। नहीं, नहीं, बच्चा। पैर नहीं छूना है। हाथ बढ़ाओ। मैंने देखा, बीस रुपये का नोट दस बार मोड़कर उन्होंने लेमनवूस इतना छोटा कर दिया है। मैंने अन्यमनस्क अपना हाथ बढ़ा दिया। उन्होंने मेरे हाथ में अपनी मुट्ठी खोली। अरे, यह क्या? यह तो एक रूद्राक्ष है। पर अभी तो हाथ में बीस का नोट था। रूद्राक्ष कहां से? मैं हतप्रभ देखती रह गई। उन्होंने कहना शुरू किया, “देखो, तुम्हारे पास पैसा टिकता नहीं है, इसे गले में धारण करना। और अगर न कर सको तो गल्ले में रख देना”। मैंने हाँ में सिर हिलाया। मैं जाने को हुई। फिर एक सवाल, “मांस खाती हो?” दुबारा तेज आवाज में कहा, “बोलो। झूठ मत बोलना”। मैंने धीरे-से कहा, “अभी छोड़ दिया है”। उन्होंने बहुत-ही विनम्रता से कहा, “हमें एक बार भोजन नहीं कराओगी। अरे, एक बार खाना खाएंगे”। अब कैसे... , मैं असमंजस में ... । उन्होंने तुरंत कहा, “कुछ पैसे दे दो”। “चेंज नहीं है”, मैंने कहा। “तुम्हें जो देना है, वही दो, मैं देता हूँ”, उन्होंने कहा। मैंने 200 रुपये का नोट निकाला। धीरे से बढ़ाया। कहा, “100 रुपये रख लीजिये”। उन्होंने झट से लपक लिया। मैं देखने लगी। बाबा, रुपये वापस करेंगे। पर बाबा तो 200 रुपये के नोट को उसी तरह दस बार मोड़कर लेमनवूस बना चुके थे। कहने लगे, “मैं देवघर जा रहा हूँ, वहीं बाबा के यहां तुम्हारा लिखा गया। तुम विंता मत करो, बाबा के यहां लिखा गया है, बाबा भला करेंगे”।

“सब रख लेंगे”, मैंने विह्वल होकर कहा। “अरे, सब ठीक होगा, सब ठीक होगा”, कहकर उन्होंने हाथ हिलाया। मतलब अब तुम जाओ। मैं ठगी-सी खड़ी रह गई। उन्होंने फिर हाथ हिलाया, “अरे, सब ठीक होगा, सब ठीक होगा”।

मैं धीरे-से आगे बढ़ गई। समझ में नहीं आ रहा था, यह दो मिनट का वाक्या। बस हंसी आ रही थी। घर जाकर बच्चों को बताया। उन्हें भी खूब हंसी आई।

पर, दुविधा में हूँ कि फिर किसी ने कहा, चाय पीना है या खाना खाना है? तो.....



वरि. अनुभाग अधिकारी/लेखा  
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

शहर की आपा-धापी से थककर,  
जीवन के मधुर पल चुराकर,  
यादें समय की पोटली में भर,  
चलें जंगल की ओर।

नील गगन को आँखों में भर,  
ओस-बिन्दु हरे पत्रक पर  
उषा-किरण तरुवर से छन कर-  
आओ निहारे भोर।

मानों, जंगल की सह कँटीली,  
तितलियों की उड़ान रंगीली,  
झरनों की गुंजित तान सुरीली,  
छू लें क्षितिज की छोर।

वरिष्ठ मंडल विकित्सा अधिकारी  
मंडल विकित्सालय, पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

आज भी वो दिन याद है,  
जब हम पांचवीं में आये थे।  
क्लास टीचर को देखकर,  
हम सब मुस्कुराये थे।।

जब हम बदमाशी करते,  
साथ मैम ने निभाया था।  
क्लास भले ही साथ छोड़ दे,  
मैम ने सबको बचाया था।।

फ्री पीरियड में पी.टी. के लिए,  
फादर से लड़ जाते थे।  
मिल जाने पर कूद - कूद कर,  
ग्राउंड में हम पहुँच जाते थे।।

ब्रेक से पहले टिफिन हम सब,  
धीरे - से खा जाते थे।  
मैम को पता चलने से पहले,  
मॉनिटर का मुँह बंद करवाते थे।।



रात को जग-जग कर,  
प्रोजेक्ट हम पूरा करते थे।  
फिर भी क्यों अकेले,  
चेक करवाने से डरते थे।।

मैम के प्रश्न पूछने पर,  
आँखें न मिलाते थे।  
आगे बैठने पर भी,  
हम हर बार बच जाते थे।।

इस साथ को पीछे छोड़कर,  
हम आगे बढ़ जाएंगे।  
यादों की पूँजी को लेकर,  
पता नहीं, कब - कहाँ मिल पाएँगे।।

कक्षा - 6

पुत्री - पूनम कुमारी  
वरि. अनुभाग अधिकारी/लेखा

भाग 3

जुलाई-अगस्त-सितंबर

## जुलाई



**अमरकांत** हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद के बाद यथार्थवादी धारा के प्रमुख कहानीकार थे। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के नगर करबे के पास स्थित भगमलपुर गाँव में 1 जुलाई, 1925 को हुआ था। 'इन्हीं हथियारों से' नामक उपन्यास के लिए उन्हें वर्ष 2007 में 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से, वर्ष 2009 में 'व्यास सम्मान' से एवं वर्ष 2009 में उन्हें 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। 17 फरवरी 2014 को उनका निधन हो गया।



**कन्हैयालाल नंदन** एक भारतीय कवि, गीतकार और हिन्दी के वरिष्ठ पत्रकार थे। उनका जन्म 1 जुलाई 1933 को उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले के परसादपुर में हुआ था। 1999 में, भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया। 25 सितंबर 2010 को उनकी मृत्यु हो गई।



**कुँवर बेचैन** एक हिन्दी कवि थे। उनका मूल नाम कुँवर बहादुर सक्सेना था। उनका जन्म 1 जुलाई 1942 को उत्तर प्रदेश के जिला मुरादाबाद के उमरी गांव में हुआ था। कोविड-19 महामारी के दौरान 29 अप्रैल 2021 को उनकी मृत्यु हो गई।



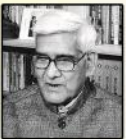
**सुषम बेदी** का जन्म 1 जुलाई 1945 को फिरोजपुर जिला, पंजाब में हुआ। वे एक भारतीय उपन्यासकार, लघु कथाकार और कवयित्री थीं। 2006 में उन्हें साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया। उनका निधन 20 मार्च 2020 को हो गया।



**बच्चन सिंह** का जन्म 2 जुलाई 1919 को उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के भदवार ग्राम में हुआ था। वे एक हिन्दी साहित्यकार, आलोचक एवं इतिहासकार थे। वाराणसी में 5 अप्रैल 2008 को उनका देहान्त हो गया।



**आलोक धन्वा** का जन्म 2 जुलाई 1948 ई० में मुंगेर (बिहार) में हुआ। वे हिंदी के उन बड़े कवियों में हैं, जिन्होंने 70 के दशक में कविता को एक नई पहचान दी।



**अब्दुल बिस्मिल्लाह** का जन्म 5 जुलाई 1949 को जनपद इलाहाबाद के बलापुर गांव में हुआ था। वे हिन्दी साहित्य जगत के प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं। उनकी पहली रचना 'झीनी झीनी बीनी वदरिया' हिन्दी कथा साहित्य की एक मील का पत्थर मानी जाती है। उन्होंने उपन्यास के साथ ही कहानी, कविता, नाटक एवं आलोचनाएं आदि भी लिखी हैं। उन्हें 1987 में सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से, मध्य प्रदेश साहित्य परिषद का अखिल भारतीय देव पुरस्कार, 30 प्र० हिन्दी संस्थान व हिन्दी अकादमी, दिल्ली के सम्मानों से तथा 2013 में डॉ राही मासूम रजा साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया।



**चंद्रधर शर्मा गुलेरी** का जन्म 7 जुलाई, 1883 को राजस्थान की वर्तमान राजधानी जयपुर में हुआ था। वे हिन्दी के कथाकार, व्यंगकार तथा निबन्धकार थे। उन्हें 1915 में पहली बार प्रकाशित हुई 'उसने कहा था' के लेखक के रूप में जाना जाता है, जिसे हिंदी की पहली लघु कहानी माना जाता है। कहानी उसने कहा था को 1960 में इसी नाम से बड़े पर्दे पर लाया गया था। बिमल रॉय द्वारा निर्मित सुनील दत्त और नंदा अभिनीत इस फिल्म का निर्देशन मोनी भट्टाचार्य ने किया था। 12 सितम्बर, 1922 को उनका देहावसान हो गया।



**केदारनाथ सिंह** का जन्म 7 जुलाई, 1934 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के चकिया गाँव में हुआ था। वे हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि व साहित्यकार थे। केदारनाथ सिंह को 1989 में उनकी कृति 'अकाल में सारस' को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था। इसके अलावा उन्हें व्यास सम्मान मध्य प्रदेश का मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, उत्तर प्रदेश का भारत-भारती सम्मान, बिहार का दिनकर सम्मान तथा केरल का कुमार आशान सम्मान मिला था। वर्ष 2013 में उन्हें प्रतिष्ठित ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इस पुरस्कार से सम्मानित होने वाले वह हिन्दी के 10वें साहित्यकार थे।



**प्रभाष जोशी** का जन्म 15 जुलाई, 1936 को मध्य प्रदेश के शहर इंदौर के निकट स्थित बड़वाहा में हुआ था। वे हिन्दी पत्रकारिता के आधार स्तंभों में से एक थे। उन्हें हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में योगदान के लिए साल 2007-08 का शलाका सम्मान भी प्रदान किया गया था। 5 नवम्बर 2009 को उनकी मृत्यु हो गई।



**रमेश पोखरियाल 'निशंक'** का जन्म 15 जुलाई, 1958 को पिनानी ग्राम, पौड़ी गढ़वाल तत्कालीन उत्तर प्रदेश (अब उत्तराखण्ड) में हुआ था। वे एक एक हिन्दी कवि, भारतीय राजनीतिज्ञ तथा वर्तमान भारत सरकार में केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री रहे हैं। रमेश पोखरियाल जी उत्तराखण्ड राज्य के पाँचवें मुख्यमंत्री रहे हैं। उन्हें भारत सरकार द्वारा "हिमालय का महाकुम्भ- नंदा राज जात" पुस्तक पर वर्ष 2008-09 का राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार, पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम द्वारा साहित्य गौरव सम्मान, भारत गौरव सम्मान, हिन्दी गौरव सम्मान, साहित्य भूषण सम्मान, साहित्य मनीषि सम्मान से सम्मानित किया गया।



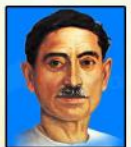
**ताराशंकर बंधोपाध्याय** का जन्म 23 जुलाई, 1898 को बंगाल के भीरभूम जिले के लाभपुर गाँव में हुआ था। वे बांग्ला भाषा के सुप्रसिद्ध साहित्यकार थे। उन्हें 1956 में "आरोग्य निकेतन" नामक उपन्यास के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1966 में "गणदेवता" के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार एवं 1969 में भारत सरकार द्वारा साहित्य एवं शिक्षा में योगदान देने के लिए तीसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। 14 सितंबर 1971 को उनका देहावसान हो गया।



**कृष्ण बलदेव वैद** का जन्म 27 जुलाई 1927 को डिंगा, (पंजाब (पाकिस्तान)) में हुआ। वे हिन्दी के आधुनिक गद्य-साहित्यकार हैं। उन्होंने डायरी लेखन, कहानी, उपन्यास, नाटक और अनुवाद के क्षेत्र में भी अप्रतिम योगदान दिया है। 6 फरवरी 2020 को उनका निधन हो गया।



**नामवर सिंह** का जन्म 28 जुलाई 1926 को बनारस (वर्तमान में चंदौली जिला) के एक गाँव जीयनपुर में हुआ था। वे हिन्दी के मूर्धन्य आलोचक, सम्पादक, वक्ता एवं विद्वान रहे हैं। उन्हें 1971 में 'कविता के नये प्रतिमान' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से तथा हिंदी अकादमी, दिल्ली की ओर से शलाका सम्मान से सम्मानित किया गया। 19 फरवरी 2019 को उनका निधन हो गया।



**मुंशी प्रेमचंद** का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी जिले (उत्तर प्रदेश) के लमही नामक गाँव में हुआ था। उनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। वे हिन्दी और उर्दू के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार, कहानीकार एवं विचारक थे। उन्होंने हिन्दी समाचार पत्र जागरण तथा साहित्यिक पत्रिका हंस का संपादन और प्रकाशन भी किया। हिन्दी कहानी तथा उपन्यास के क्षेत्र में 1918 से 1936 तक के कालखण्ड को 'प्रेमचंद युग' कहा जाता है। 8 अक्टूबर 1936 को उनका निधन हो गया।



**जगन्नाथ प्रसाद चौबे 'वनमाली'** का जन्म 1 अगस्त, 1912 को आगरा में हुआ था। वे हिन्दी साहित्यकार थे। 1962 में डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के हाथों उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार से विभूषित किया गया। 30 अप्रैल, 1976 को उनका निधन हो गया।



**राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त** का जन्म 3 अगस्त, 1886 को उत्तर प्रदेश में झांसी के पास चिरगांव में हुआ। वे हिन्दी साहित्य के इतिहास में खड़ी बोली के प्रथम महत्वपूर्ण कवि हैं। उन्हें साहित्य जगत में 'दहा' नाम से सम्बोधित किया जाता था। उनकी कृति भारत-भारती (1912) भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के समय में काफी प्रभावशाली सिद्ध हुई थी और इसी कारण महात्मा गांधी ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' की पदवी भी दी थी। उनकी जयन्ती 3 अगस्त को हर वर्ष 'कवि दिवस' के रूप में मनाया जाता है। सन् 1953 में भारत सरकार ने उन्हें पद्म विभूषण से और सन 1954 में पद्मभूषण से सम्मानित किया।



**शिवमंगल सिंह 'सुमन'** का जन्म 5 अगस्त, 1915 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के झगरपुर में हुआ था। वे एक प्रसिद्ध हिंदी कवि और शिक्षाविद थे। उन्हें 1974 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1999 में पद्म भूषण एवं 1974 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया। 27 नवंबर 2002 को दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया।



**भीष्म साहनी** का जन्म 8 अगस्त, 1915 को रावलपिंडी, पाकिस्तान में हुआ। वे आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख स्तंभों में से थे। भीष्म साहनी को हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद की परंपरा का अग्रणी लेखक माना जाता है। भीष्म साहनी हिन्दी फिल्मों के जाने माने अभिनेता बलराज साहनी के छोटे भाई थे। उन्हें 1975 में "तमस" के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा 1998 में भारत सरकार के पद्मभूषण अलंकरण से विभूषित किया गया। 11 जुलाई, 2003 को उनका निधन हुआ।



**शिवपूजन सहाय** का जन्म 9 अगस्त, 1893 को गांव उनवांस, शाहाबाद, बिहार में हुआ। हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार, सम्पादक और पत्रकार थे। उन्हें 1960 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। 21 जनवरी, 1963 को उनका निधन हुआ।



**अभिमन्यु अनंत** का जन्म 9 अगस्त, 1937 को मॉरीशस के उत्तर प्रान्त में स्थित त्रियोले गांव में हुआ। वे मॉरीशस के हिन्दी कथा-साहित्य के सम्राट हैं। अभिमन्यु अनंत को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जैसे साहित्य अकादमी, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, यशपाल पुरस्कार, जनसंस्कृति सम्मान, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार आदि।



**सुभद्रा कुमारी चौहान** हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका थीं। 'झांसी की रानी' उनकी प्रसिद्ध कविता है। उनका जन्म 16 अगस्त, 1904 को इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गांव में हुआ था। 15 फरवरी 1948 को एक कार दुर्घटना में उनका आकस्मिक निधन हो गया था।



**अमृतलाल नागर** हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार थे। अमृत लाल नागर का जन्म 17 अगस्त 1916 को गोकुलपुरा, आगरा (उत्तर प्रदेश) में हुआ। उन्हें भारत सरकार द्वारा 1981 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। उन्हें 'अमृत और विष' के लिए वर्ष 1967 का साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 23 फरवरी, 1990 को उनका निधन हो गया।



**गुलजार** नाम से प्रसिद्ध सम्पूर्ण सिंह कालरा का जन्म 18 अगस्त, 1934 को भारत के झेलम जिला पंजाब के दीना गाँव में, जो अब पाकिस्तान में है, हुआ था। वे हिन्दी फिल्मों के एक प्रसिद्ध गीतकार, कवि, पटकथा लेखक, फिल्म निर्देशक, नाटककार तथा प्रसिद्ध शायर हैं। उन्हें 2002 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और 2004 में भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण से भी सम्मानित किया जा चुका है।

वर्ष 2009 में डैनी बॉयल निर्देशित फिल्म स्लमडाग मिलियनेयर में उनके द्वारा लिखे गीत जय हो के लिये उन्हें सर्वश्रेष्ठ गीत का ऑस्कर पुरस्कार मिल चुका है। इसी गीत के लिये 2010 में उन्हें ग्रैमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है। उन्हें 1977, 1979, 1980, 1983, 1988, 1991, 1998, 2002, 2005 में सर्वश्रेष्ठ गीतकार के लिए फिल्मफेयर पुरस्कार, 2013 में दादा साहब फाल्के सम्मान और 2023 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



**हजारी प्रसाद द्विवेदी** हिन्दी निबन्धकार, आलोचक और उपन्यासकार थे। उनका जन्म 19 अगस्त 1907 ई० को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के ओझवलिया नामक गाँव में हुआ था। सन 1957 में उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। 1973 में 'आलोक पर्व' निबन्ध संग्रह के लिए उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। 19 मई 1979 को उनका निधन हो गया।



**त्रिलोचन शास्त्री** का जन्म 20 अगस्त, 1917 को उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले के कटघरा विरानी पट्टी में हुआ था। उनका मूल नाम वासुदेव सिंह था। कवि त्रिलोचन को हिन्दी साहित्य की प्रगतिशील काव्यधारा का प्रमुख हस्ताक्षर माना जाता है। वे आधुनिक हिन्दी कविता की प्रगतिशील त्रयी के तीन स्तंभों में से एक थे। इस त्रयी के अन्य दो सतंभ नागार्जुन व केदारनाथ अग्रवाल थे। हिन्दी साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें 'शास्त्री' और 'साहित्य रत्न' जैसे उपाधियों से सम्मानित किया जा चुका है। 1982 में 'ताप के ताप हुए दिन' के लिए उन्हें साहित्य अकादमी का पुरस्कार भी मिला था। 9 दिसम्बर 2007 को उनका निधन हो गया।



**इस्मत चुगताई** भारत से उर्दू की एक लेखिका थीं। उनका जन्म 21 अगस्त 1915 को उत्तर प्रदेश के बदायूँ में हुआ। उर्दू साहित्य की दुनिया में 'इस्मत आपा' के नाम से विख्यात इस लेखिका का निधन 24 अक्टूबर 1991 को हुआ। उन्हें 1976 पद्म श्री एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



**गिरिजा कुमार माथुर** एक कवि, नाटककार और समालोचक थे। उनका जन्म 22 अगस्त, 1919 को मध्य प्रदेश के अशोक नगर में हुआ। 1991 में उनकी कविता-संग्रह 'मैं वक्त के हूँ सामन' के लिए हिन्दी का साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा इसी काव्य संग्रह के लिए 1993 में के. के. बिरला फाउंडेशन द्वारा दिया जाने वाला प्रतिष्ठित व्यास सम्मान प्रदान किया गया। गिरिजाकुमार माथुर का 10 जनवरी 1994 को उनका निधन हो गया।



**हरिशंकर परसाई** हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक और व्यंगकार थे। वे हिन्दी के पहले रचनाकार हैं जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया। उनका जन्म 22 अगस्त, 1924 को जमानी, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश में हुआ था। उन्हें 'विकलांग श्रद्धा का दौर' के लिए 1982 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 10 अगस्त, 1995 को उनका निधन हो गया।



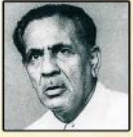
**नासिरा शर्मा** हिन्दी की प्रमुख लेखिका हैं। नासिरा शर्मा का जन्म 22 अगस्त, 1948 को इलाहाबाद शहर में हुआ। 2016 का साहित्य अकादमी पुरस्कार उनके उपन्यास 'पारिजात' के लिए प्रदान किया गया। 2019 का व्यास सम्मान इनके उपन्यास 'कागज की नाव' के लिए दिया गया।



**तसलीमा नसरीन** बांग्ला लेखिका एवं भूतपूर्व विकित्सक हैं जो 1994 से बांग्लादेश से निर्वासित हैं। तसलीमा का जन्म प्रचलित रूप से 25 अगस्त, 1962 को माना जाता है, परन्तु वास्तव में उनका जन्म 5 सितंबर 1960 को तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) के मयमनसिंह शहर में हुआ था।



**आचार्य चतुरसेन शास्त्री** हिन्दी भाषा के एक उपन्यासकार थे। उनका जन्म 26 अगस्त 1891 को उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले के चांदोख में हुआ था। उनका मूल नाम चतुर्भुज था। 2 फरवरी 1960 को उनका निधन हो गया।



**रघुपति सहाय 'फिराक'** जिन्हें उनके शायरी के उपनाम 'फिराक' गोरखपुरी से अधिक जाना जाता है, उर्दू भाषा के प्रसिद्ध रचनाकार हैं। उनका जन्म 28 अगस्त, 1896 को गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। 1970 में उनकी उर्दू काव्यकृति 'गुले नग्मा' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। उन्हें 'गुले-नग्मा' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार और सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। फिराक गोरखपुरी को साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में सन 1968 में भारत सरकार ने पद्म भूषण से सम्मानित किया था। 3 मार्च 1982 को उनका निधन हो गया।

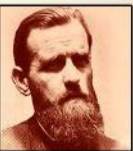


**भगवतीचरण वर्मा** हिन्दी साहित्यकार थे। उनका जन्म 30 अगस्त, 1903 को उ० प्र० के उन्नाव जिले के शफीपुर गाँव में हुआ था। उन्हें साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा 1971 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। 'चित्रलेखा' उपन्यास पर दो बार फिल्म-निर्माण और 'भूले-बिसरे चित्र' साहित्य अकादमी से सम्मानित किया गया। 5 अक्टूबर 1981 को उनका निधन हो गया।



**अमृता प्रीतम** पंजाबी के सबसे लोकप्रिय लेखकों में से एक एवं पंजाबी भाषा की पहली कवयित्री थी। अमृता प्रीतम का जन्म 31 अगस्त, 1919 में गुजरांवाला पंजाब (भारत) में हुआ। अपने अंतिम दिनों में अमृता प्रीतम को भारत का दूसरा सबसे बड़ा सम्मान पद्म विभूषण भी प्राप्त हुआ। उन्हें 1957 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1958 में पंजाब सरकार के भाषा विभाग द्वारा पुरस्कृत, 1988 में बल्गारिया वैरोव पुरस्कार (अन्तर्राष्ट्रीय) और 1982 में भारत के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 31 अक्टूबर 2005 को उनका निधन हो गया।

## सितंबर



**फादर कामिल बुल्के** बेल्जियम से भारत आये एक मिशनरी थे। कामिल बुल्के का जन्म 1 सितंबर, 1909 को बेल्जियम के वेस्ट फ्लैंडर्स में नॉकके-हेइस्ट नगरपालिका (म्यूनीसिपैलिटी) के एक गांव यमस्केपेल में हुआ था। भारत सरकार द्वारा 1974 में इनके साहित्य व शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए पद्म भूषण से सम्मानित किया। 17 अगस्त 1982 को उनका निधन हो गया।



**यशपाल जैन** एक भारतीय लेखक थे। उनका जन्म 1 सितंबर 1912 को ब्रिटिश भारत के आगरा और अवध के संयुक्त प्रांत अलीगढ़ जिले के विजयगढ़ में हुआ था। भारत सरकार ने उन्हें 1990 में पद्म श्री से सम्मानित किया। 10 अक्टूबर 2000 को उनका निधन हो गया।



**राही मासूम रजा** का जन्म 1 सितंबर, 1927 को गाजीपुर जिले के गंगौली गांव में हुआ। वे उर्दू और हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि एवं लेखक हैं। उन्होंने दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले टीवी धारावाहिक महाभारत की पटकथा और संवाद लिखे। 15 मार्च 1992 को उनका निधन हो गया।



**दुष्यंत कुमार त्यागी** एक हिन्दी कवि, कथाकार और गजलकार थे। दुष्यंत कुमार का जन्म 1 सितंबर, 1933 को उत्तर प्रदेश में बिजनौर जनपद की तहसील नजीबाबाद के ग्राम राजपुर नवादा में हुआ था। 30 दिसंबर 1975 को उनका निधन हो गया।



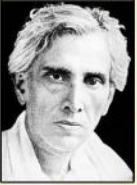
**सियारामशरण गुप्त** हिन्दी के साहित्यकार थे। वे प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुज थे। सियारामशरण गुप्त का जन्म 4 सितंबर, 1895 को चिरगाँव, झांसी में हुआ था। 29 मार्च 1963 को उनका निधन हो गया।



**सुनील गंगोपाध्याय** बंगाली भाषा के एक भारतीय कवि, उपन्यासकार, लघु कथाकार, इतिहासकार और आलोचक थे। उन्हें रवींद्रनाथ टैगोर के बाद बंगाली में सबसे विपुल और लोकप्रिय लेखकों में से एक माना जाता है। उनका जन्म 7 सितंबर 1934 को मदारीपुर में एक बंगाली हिंदू परिवार में हुआ था, जो अब बांग्लादेश है। उन्हें 1979 में आकाशवाणी कोलकाता द्वारा 'राष्ट्रीय कवि' सम्मान, 1983 में 'सेई सोमोय' पुस्तक के लिए बंकिम पुरस्कार, 1984 में 'सेई सोमोय' पुस्तक के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 23 अक्टूबर 2012 को उनका निधन हो गया।



**भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाते हैं। वे हिन्दी में आधुनिकता के पहले रचनाकार थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का 9 सितंबर 1850 को काशी में हुआ। इनका मूल नाम 'हरिश्चन्द्र' था, 'भारतेन्दु' उनकी उपाधि थी। 6 जनवरी 1885 को उनका निधन हो गया।



**शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय** बांग्ला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार एवं लघुकथाकार थे। वे बांग्ला के सबसे लोकप्रिय उपन्यासकार हैं। उनका जन्म 15 सितंबर, 1876 को हुगली जिले के देवानन्दपुर में हुआ। 'देवदास' उनकी सबसे लोकप्रिय रचनाओं में से एक है। 16 जनवरी, 1938 को उनका निधन हो गया।



**डॉ रामकुमार वर्मा** हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार, व्यंग्यकार और हास्य कवि के रूप में जाने जाते हैं। उन्हें हिन्दी एकांकी का जनक माना जाता है। डॉ. रामकुमार वर्मा का जन्म 15 सितम्बर, 1905 को मध्य प्रदेश के सागर जिले में हुआ। उन्हें साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में सन 1963 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। 15 अक्टूबर 1990 को उनका निधन हो गया।



**सर्वेश्वर दयाल सक्सेना** हिन्दी कवि एवं साहित्यकार थे। 15 सितंबर 1927 को बस्ती (उ० प्र०) में उनका जन्म हुआ। सन 1983 में कविता संग्रह 'खूंटियों पर टंगे लोग' के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 23 सितंबर 1983 को उनका निधन हो गया।



**काका हाथरसी** हिन्दी हास्य कवि थे। उनका जन्म 18 सितंबर, 1906 को हाथरस, उत्तर प्रदेश में हुआ। उनका असली नाम प्रभुलाल गर्ग था। 18 सितंबर, 1995 को उनका निधन हो गया।



**रामधारी सिंह 'दिनकर'** हिन्दी के एक प्रमुख लेखक, कवि व निबन्धकार थे। वे आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में स्थापित हैं। उनका जन्म 24 सितंबर 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में हुआ था। 'संस्कृति के चार अध्याय' के लिये उन्हें 1959 में साहित्य अकादमी से सम्मानित किया गया। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद ने उन्हें 1959 में पद्म भूषण से सम्मानित किया। वर्ष 1972 में काव्य रचना 'उर्वशी' के लिये उन्हें ज्ञानपीठ से सम्मानित किया गया। 24 अप्रैल 1974 को उनका निधन हो गया।



**प्रतापनारायण मिश्र** का जन्म 24 सितंबर, 1856 बैजे गांव, बेथर (जनपद उन्नाव) बैसवारा (उत्तर प्रदेश) में हुआ। वे भारतेन्दु मण्डल के प्रमुख लेखक, कवि और पत्रकार थे। 6 जुलाई, 1894 को उनका निधन हो गया।

कनिष्ठ अनुवादक  
राजभाषा विभाग  
म.रे.प्र. कार्यालय  
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक सुश्री सौम्या माथुर द्वारा  
भटनी-वाराणसी सिटी रेल खण्ड के विण्डो ट्रेलिंग एवं वाराणसी सिटी स्टेशन का निरीक्षण



दिनांक 01 जुलाई, 2024 को पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक सुश्री सौम्या माथुर ने भटनी-वाराणसी सिटी विण्डो ट्रेलिंग निरीक्षण कर इस खण्ड पर दोहरीकरण कार्यों की प्रगति, मानसून के मौसम में सुरक्षित एवं संरक्षित रेल संचालन हेतु अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिया साथ ही सिग्नल की दृश्यता को दुरुस्त बनाये रखने का भी निर्देश दिया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव, मुख्य परियोजना प्रबंधक (गतिशक्ति) श्री कौशलेस सिंह, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (समन्वय) श्री राकेश रंजन सहित वाराणसी मंडल के सभी शाखा अधिकारी उपस्थित थे।

पूर्वोत्तर रेलवे भारत स्काउट्स एंड गाइड्स जिला संघ वाराणसी तत्वाधान में  
स्काउट गाइड रोवर रेंजर एवं लीडर्स को जागरूक किया



वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर एवं जिला आयुक्त स्काउट श्री अनुभव पाठक के निर्देशन में पूर्वोत्तर रेलवे भारत स्काउट्स एंड गाइड्स जिला संघ वाराणसी तत्वाधान में BS&G, राष्ट्रीय मुख्यालय नई दिल्ली द्वारा प्रसारित CLAP प्रोजेक्ट के अन्तर्गत दिनांक 07 जुलाई 2024 को जिला संघ - वाराणसी के स्काउट डेन पर Anemia Awareness, Adolescent health, Heat wave, के संबंध में जिला संघ वाराणसी के CLAP लीडर्स द्वारा वीडियो/विलप्स के माध्यम से स्काउट गाइड रोवर रेंजर एवं लीडर्स को जागरूक किया गया।

पूर्वोत्तर रेलवे के अपर महाप्रबन्धक श्री दिनेश कुमार सिंह द्वारा  
गोरखपुर-छपरा खण्ड का विण्डो ट्रेलिंग, छपरा स्टेशन एवं यार्ड का निरीक्षण



पूर्वोत्तर रेलवे के अपर महाप्रबन्धक श्री दिनेश कुमार सिंह ने ११ जुलाई, २०२४ को गोरखपुर-छपरा विण्डो ट्रेलिंग निरीक्षण कर मानसून में सुरक्षित एवं संरक्षित रेल संचालन, ट्रैक विलयरेंस एवं सिग्नल की स्पष्ट दृश्यता हेतु संबंधित को आवश्यक निर्देश दिया। साथ ही ट्रैक के किनारों पर उगे वृक्षों एवं झाड़ियों की छँटाई का भी निर्देश दिया। इस अवसर पर उनके साथ वाराणसी मंडल के अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रा) श्री रोशन लाल यादव सहित मंडलीय शाखा अधिकारी तथा वरिष्ठ पर्यवेक्षक एवं स्टेशन के रेल कर्मचारी उपस्थित थे।

मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव के निर्देशन पर समपार फाटकों के निकट पड़ने वाले विद्यालयों में संरक्षा जागरुकता अभियान के तहत शिक्षा अदालत लगाकर बच्चों संरक्षा ज्ञान दिया गया



मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव के निर्देशन एवं वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी श्री बलेंद्र पाल के नेतृत्व में 13 जुलाई, 2024 को वाराणसी मंडल के वाराणसी सिटी-मऊ रेल खण्ड पर पड़ने वाले समपार फाटकों और उनके निकट पड़ने वाले विद्यालयों में संरक्षा जागरुकता अभियान के तहत शिक्षा अदालत लगाकर बच्चों संरक्षा ज्ञान दिया गया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा  
गाड़ी संख्या 15127 बनारस-नई दिल्ली काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस का औचक निरीक्षण



मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने 26 जुलाई, 2024 को गाड़ी संख्या 15127 बनारस-नई दिल्ली काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस का बनारस स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या 06 पर औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उनके साथ वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर (C&W) श्री अनुभव पाठक, मंडल परिवालन प्रबंधक श्री रतनदीप गुप्ता, कोचिंग डिपो अधिकारी बनारस श्री विनीत रंजन सिंह उपस्थित रहे।

वाराणसी मंडल के रेलवे सुरक्षा बल (आर.पी.एफ.) ने पिछले 08 वर्षों के दौरान  
'ऑपरेशन नन्हे फरिश्ते' के तहत 908 बच्चों को बचाया।



पिछले आठ वर्षों में, रेलवे सुरक्षा बल (आर.पी.एफ.) 'नन्हे फरिश्ते' नामक एक ऑपरेशन में अग्रणी रहा है। यह एक मिशन जो विभिन्न भारतीय रेल जोनों एवं मंडलों में पीड़ित बच्चों को बचाने के लिए समर्पित है। पिछले आठ वर्षों (2017-2024) के जुलाई, 2024 तक के दौरान, वाराणसी मंडल के रेलवे सुरक्षा बल जवानों ने स्टेशनों और ट्रेनों में खतरे में पड़े या खतरे में फंसने से 908 बच्चों को बचाया है।

मंडल रेल प्रबंधक, वाराणसी श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा बनारस-औड़िहार-जौनपुर रेल खण्ड के विण्डो ट्रेलिंग संरक्षा निरीक्षण के दौरान औड़िहार, डोभी तथा केराकत स्टेशन का संरक्षा निरीक्षण



मंडल रेल प्रबंधक, वाराणसी श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव स्व चालित निरीक्षण यान से 01 अगस्त, 2024 को बनारस-औड़िहार-जौनपुर रेल खण्ड का विण्डो ट्रेलिंग संरक्षा निरीक्षण कर रेल परिवालन में संरक्षा, यात्रियों की सुरक्षा, यात्री सुख सुविधाओं के विकास कार्यों एवं इस रेल खण्ड पर चल रहे परिवलनिक सुधार एवं विकास कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। इस अवसर पर उनके साथ वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर (सामान्य) पंकज केशवानी, वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी श्री बलेन्द्र पाल, सहायक मंडल परिवालन प्रबंधक (कोविंग) श्री हीरा लाल, जनसम्पर्क अधिकारी श्री अशोक कुमार सहित वरिष्ठ पर्यवेक्षक तथा रेलवे कर्मचारी उपस्थित थे।

रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने खतरनाक यूट्यूबर गुलजार शेख को गिरफ्तार किया



रेलवे सुरक्षा बल ने लापरवाही भरे व्यवहार पर एक बड़ी कार्रवाई करते हुए, पब्लिसिटी के लिए रेलवे ट्रैक के साथ आपराधिक छेड़छाड़ करके सार्वजनिक सुरक्षा को खतरे में डालने के आरोप में एक यूट्यूबर को गिरफ्तार किया है। ट्विटर पर वायरल वीडियो में एक व्यक्ति को रेलवे ट्रैक पर विभिन्न प्रकार की वस्तुएं रखते हुए दिखाया गया था, जिसके बाद तत्काल जांच की गई। अपराधी, गुलजार शेख ने अपने यूट्यूब चैनल पर 250 से अधिक वीडियो अपलोड किए हैं और उसके 2 लाख से अधिक सब्सक्राइबर हैं। शेख की यूट्यूब प्रोफाइल और सोशल मीडिया उपस्थिति के विस्तृत विश्लेषण के माध्यम से, आरपीएफ ऊंचाहार, उत्तर रेलवे ने 01/08/2024 को रेलवे अधिनियम के विभिन्न प्रावधानों के तहत अपराध दर्ज किया। उसी दिन, आरपीएफ और स्थानीय पुलिस की एक संयुक्त टीम ने श्री गुलजार शेख, पुत्र सैयद अहमद को खांडरौली गांव, सोरांव (इलाहाबाद), उत्तर प्रदेश में उनके निवास से गिरफ्तार किया।

मंडल रेल प्रबंधक, वाराणसी श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा अमृत भारत योजना के अंतर्गत चल रहे विकास कार्यों के परिपेक्ष्य में सीवान स्टेशन का निरीक्षण



मंडल रेल प्रबंधक, वाराणसी श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा दिनांक 07 अगस्त, 2024 को छपरा-सीवान रेल खण्ड का विण्डो ट्रेलिंग संरक्षा निरीक्षण कर रेल परिवालन में संरक्षा, यात्रियों की सुरक्षा, अमृत भारत योजना के अंतर्गत चल रहे यात्री सुख सुविधाओं के विकास कार्यों एवं इस रेल खण्ड पर संरक्षा का निरीक्षण किया। इस अवसर पर वाराणसी मंडल के शाखा अधिकारी उपस्थित थे।

मंडल रेल प्रबंधक, वाराणसी श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा सलेमपुर-बरहज रेल खण्ड का विण्डो निरीक्षण



मंडल रेल प्रबंधक, वाराणसी श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव अपने एक दिवसीय निरीक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत अपनी निरीक्षण स्पेशल ट्रेन से 07 अगस्त, 2024 को सलेमपुर-बरहज बाजार (Only One Train System) केवल एक गाड़ी पधति रेल खण्ड का विण्डो ट्रेलिंग संरक्षा निरीक्षण कर रेल परिवालन में संरक्षा, यात्रियों की सुरक्षा एवं इस रेल खण्ड पर संरक्षा का निरीक्षण किया। इस अवसर पर उनके साथ वरिष्ठ मंडल इंजीनियर प्रथम श्री ऋषि श्रीवास्तव, उप मुख्य इंजीनियर (गति शक्ति) श्री आई. सी. सुभाष, सहायक परिवालन प्रबंधक (कोविंग) श्री हीरा लाल, जनसम्पर्क अधिकारी श्री अशोक कुमार सहित वरिष्ठ पर्यवेक्षक तथा रेलवे कर्मचारी उपस्थित थे।

मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने रेलवे स्टेडियम, लहरतारा में आयोजित भव्य समारोह में ध्वजारोहण कर परेड की सलामी ली



पूर्वोत्तर रेलवे के वाराणसी मंडल पर 78वाँ स्वतंत्रता दिवस समारोह पूरी भव्यता एवं विस्तार के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने रेलवे स्टेडियम, लहरतारा में आयोजित भव्य समारोह में ध्वजारोहण कर परेड की सलामी ली। इस अवसर पर वाराणसी मंडल के सभी अधिकारी तथा मंडल कार्यालय पर कार्यरत कर्मचारी गण उपस्थित थे।

मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने 78वाँ स्वतंत्रता दिवस समारोह पर 15 कर्मचारियों को मंडल स्तर पर प्रशस्ति पत्र एवं नगद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया।



पूर्वोत्तर रेलवे के वाराणसी मंडल पर 78वाँ स्वतंत्रता दिवस समारोह पूरी भव्यता एवं विस्तार के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने रेलवे मिनी स्टेडियम, लहरतारा में आयोजित भव्य समारोह में अपनी कर्तव्यपरायणता का परिचय देकर रेल सुरक्षा एवं संरक्षा में उल्लेखनीय योगदान देने वाले 15 कर्मचारियों को मंडल स्तर पर प्रशस्ति पत्र एवं नगद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया।

क्षेत्रीय रेल हिंदी नाट्योत्सव में वाराणसी मण्डल द्वारा  
प्रस्तुत नाटक 'बड़े भाई साहब' को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।



पूर्वोत्तर रेलवे राजभाषा विभाग के तत्वावधान में 22 अगस्त, 2024 को रेलवे प्रेक्षागृह, गोरखपुर में “क्षेत्रीय रेलवे हिन्दी नाटक प्रतियोगिता-2024” का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्यालय एवं मंडलों के भी वरिष्ठ रेल अधिकारी उपस्थित थे। प्रतियोगिता में क्षेत्रीय रेल हिंदी नाट्योत्सव में वाराणसी मण्डल द्वारा प्रस्तुत नाटक 'बड़े भाई साहब' को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। नाट्योत्सव में पूर्वोत्तर रेलवे के 4 दलों मुख्यालय / गोरखपुर, वाराणसी मण्डल, लखनऊ मण्डल, इज्जतनगर मण्डल ने भाग लिया। वाराणसी मण्डल द्वारा प्रस्तुत नाटक 'बड़े भाई साहब' कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद द्वारा इसी शीर्षक से रचित कहानी का नाट्य रूपांतरण है। मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने राजभाषा विभाग एवं नाटक मण्डली के कलाकारों को इस उपलब्धी पर अपने कार्यालय में बधाई दी साथ ही राजभाषा अधिकारी श्री नवनीत वर्मा को सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रा) श्री रोशन लाल यादव, वरिष्ठ मंडल आंकड़ा प्रबंधक एवं राजभाषा अधिकारी श्री नवनीत वर्मा, राजभाषा विभाग के कर्मचारी एवं नाटक में प्रतिभाग करने वाले कलाकार कर्मचारी उपस्थित थे।

बनारस लोकोमोटिव वर्क्सशाप के प्राविधिक प्रशिक्षण केंद्र में,  
राजभाषा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) का छमाही बैठक आयोजित की गई



बनारस लोकोमोटिव वर्क्सशाप के प्राविधिक प्रशिक्षण केंद्र में, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 19 जुलाई 2024 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) का छमाही बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता महाप्रबंधक, बरेका, नराकास श्री अभय बाकरे ने की। बरेका के वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी डा. संजय कुमार सिंह ने भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के सभी मदों की प्रगति से समिति को अवगत कराया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक वाराणसी श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव, केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों केन्द्रीय निगमों एवं स्वायत्तशासी संगठनों के कार्यालयों के विभागाध्यक्ष धप्रतिनिधियों ने अपने विचार व्यक्त किया।

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, वाराणसी में भारतेन्दु जयंति का आयोजन



दिनांक 09/09/2024 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, वाराणसी में भारतेन्दु जयंति का आयोजन किया गया।



राजभाषा विभाग  
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी